शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की
मासिक पत्रिका

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

वर्ष-३ अंक-१

माह : जुलाई २०२०

e-learning...

योग करो स्वस्थ रहो

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-३
अंक-१

माह- जुलाई २०२०

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन
प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
ज्योति कुमारी
आनन्द मिश्रा

सह सम्पादक
डॉ० अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

शिक्षा एक ऐसी पूँजी है जिसके अभाव में अन्य अनेक भौतिक संसाधनों का महत्व कम–सा लगता है। आज कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौर में जब हर तरफ भय और अनिश्चितता का वातावरण व्याप्त है, शिक्षा ही एक मात्र ऐसा माध्यम है जो शारीरिक और मानसिक सन्तुलन बनाये रखने में मानव जाति की सहायता कर रहा है। आज हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को इतना अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है कि आने वाली पीढ़ियाँ ऐसी विषम परिस्थितियों से विचलित न हों, बल्कि साहस और समझदारी से इनका डटकर मुकाबला करते हुए अपनी राहें आसान बना सकें।

वर्तमान समय में, जबकि विद्यालयों में कक्षाओं का औपचारिक संचालन सम्भव नहीं हो पा रहा है, बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रहना एक बड़ी चुनौती है। इसके लिये जहाँ एक तरफ विभाग द्वारा अनेक प्रयास किये जा रहे हैं, जैसे–यूट्यूब चैनेल्स पर कक्षा, विषय एवं शीर्षकवार वीडियोज, इंग्लिश टीचिंग के ऑडियोज, दूरदर्शन पर नियमित रूप से शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराना इत्यादि। वहीं दूसरी ओर, शिक्षकों द्वारा स्वयं अपने स्तर से भी बहुत प्रयास किये जा रहे हैं। यथा– यूट्यूब चैनल्स पर वीडियोज डालकर, वॉट्सएप्प ग्रुप्स पर बच्चों और अभिभावकों के समूहों का गठन कर वीडियोज और ऑडियोज, कहानी इत्यादि के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण द्वारा बच्चों को पढ़ाया जा रहा है जिनके सकारात्मक परिणाम परिलक्षित हुए हैं। ऐसे समय में ''मिशन शिक्षण संवाद'' समूह द्वारा भी अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया गया। निरंतर विभिन्न विषयों पर आधारित कक्षावार वर्कशीट्स अनेक विद्यार्थियों को पहुँचाकर उन्हें लाभान्वित करने का प्रयास किया गया है। ''मिशन शिक्षक संवाद'' द्वारा अनेक वर्चुअल कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं जिनके माध्यम से अनेक शिक्षकों को ई–कन्टेन्ट सृजन हेतु प्रशिक्षित किया गया।

संज्ञान में लाया गया है कि मिशन शिक्षण संवाद द्वारा पत्रिका प्रकाशन की दिशा में दो वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिये गये हैं। निस्संदेह, इसके लिये बहुत परिश्रम किया गया होगा। पत्रिका के विभिन्न स्तम्भ शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिये लाभप्रद होते हैं। इस अवसर पर ''मिशन शिक्षण संवाद'' द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए पत्रिका के आगामी अंक हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(अब्दुल मुबीन)
सहायक शिक्षा निदेशक
बेसिक शिक्षा निदेशालय उ0प्र0 लखनऊ।

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

शिक्षा के क्षेत्र में सदियों से परिवर्तन होता आया है। ये परिवर्तन देश, काल, समाज की परिस्थितियों पर निर्भर रहा है। अब हम वैदिक काल से ऑनलाइन काल तक आ चुके हैं। आज ऐसी परिस्थितियाँ ऐसी बन गयी हैं कि बच्चों से खिलखिलाते विद्यालय वीरान पड़े हैं। इस संकट काल में ऑनलाइन शिक्षा बारिश में छाते जैसा हौंसला दे रही है। लेकिन दुःखद स्थिति यह है कि लाख चाहते हुए भी ऑनलाइन शिक्षा की पहुँच अधिकतम विद्यार्थियों तक अभी भी नहीं है।

वैश्विक महामारी के इस काल में सबसे बड़ी चुनौती मानसिक स्वास्थ्य को लेकर है। आज जब चारों ओर का माहौल तेजी से बदला है। घर से बाहर निकलने से लेकर बाजार जाने, सामान लाने, यात्रा करने के नियमों में सावधानियों का भारी अंबार लग गया है। अधिकतर कार्य बिना मिले–जुले घर बैठकर ही हो रहे हैं। हम सबके मस्तिष्क के लिए ये बहुत तेजी से होने वाला परिवर्तन है। इसीलिए देखा जा रहा है कि लोगों में उग्रता की वृद्धि हो गयी है। एक शिक्षक होने के नाते हम सबका उत्तरदायित्व बनता है कि हम न केवल स्वयं धैर्य से कार्य करें अपितु समाज को भी दिशा दें। इस अवसादग्रस्त समय को रचनात्मकता का अस्त्र ही काट सकता है। इसीलिए लॉकडाउन के समय में भी मिशन शिक्षण संवाद ने लगातार तकनीकी प्रशिक्षण जारी रखा। जिसका सुखद परिणाम ये हुआ कि शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षा देने में बहुत सुविधा हुई। इसके अतिरिक्त मिशन शिक्षण संवाद की टीम द्वारा लगातार वर्कशीट उपलब्ध करायी जा रही हैं जोकि बच्चों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही हैं।

इन विपरीत परिस्थितियों में भी मिशन शिक्षण संवाद ने पत्रिका का क्रम टूटने नहीं दिया है और प्रतिमाह पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। शनैः–शनैः पत्रिका को दो वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और तृतीय वर्ष का प्रथम अंक आपको समर्पित करते हुए गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	1
अनमोल रत्न	2–4
अनमोल बाल रत्न	5–6
विचारशक्ति–1	7–8
विचारशक्ति–2	9–10
विचारशक्ति–3	11–12
बात महिला शिक्षकों की	13–14
बाल कविता	15–16
टी.एल.एम.संसार	17–19
गतिविधि	20
हिन्दी साहित्य	21–22
English Medium Diary	23
प्रेरक प्रसंग	24
बाल कहानी–1	25
बाल कहानी–2	26
बाल फिल्म	27
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	28
खेल विशेष	29–31
योग विशेष	32–33
गृह शिक्षा कार्यक्रम	34–35
नवाचारों में निहित प्राथमिक शिक्षा	36–37
नवाचार–रंगों से सीखो	38

मिशन गीत

मिशन हमारा एक संजीवनी,
कैसा महान ये काम किया।
मृतप्राय सी बेसिक शिक्षा में,
प्राणवायु को फूँक दिया ।।

मिशन का उद्देश्य निराला है,
शिक्षक का सम्मान है यदि।
शिक्षा का उत्थान तभी है,
समाज को दर्पण दिखलाया है।।

बेसिक शिक्षक का समाज में,
पहले सा सम्मान न था।
उसकी मेहनत व निष्ठा का,
कोई प्रत्यक्ष गवाह न था।

दिशा मिली और सोच बढ़ी,
आत्मबल का ज्ञान मिला।।
नित नई समस्याओं का,
सकारात्मक समाधान मिला।।

धूमिल उसकी छवि हुई थी,
समाज को कोई भान न था।
काम किया पूरे मन से उसने,
कर्तव्यों से विमुख न था।।

आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है,
अभिव्यक्ति की क्षमता आयी है।
मिशन की प्रेरणा, प्रोत्साहन से,
एक नया सा ज्ञान मिला।।

लंबी चौड़ी एक सूची है,
कितने कार्यों को उसने निपटाया।
चुनाव से लेकर जनगणना तक,
सारे दायित्वों को अपनाया।।

पहचान मिली हर शिक्षक को,
गौरवान्वित उसको करवाया है।
नित निःस्वार्थ प्रयासों से मिशन,
ने सम्मान वापिस दिलाया है।।

मिशन संवाद मिला है जब से,
एक परिवर्तन सा आया है।
शिक्षक की निष्ठा व मेहनत का,
परिणाम सामने आया है।।

नई–नई विधियाँ सीखीं हमने,
कार्यशैली में बदलाव किया।
बच्चे खुश हैं समाज भी खुश,
शिक्षक को आभास दिलाया है।।

नई उम्मीदें और नई आशाएँ,
मिशन से जुड़कर जागी हैं।
न जाने कितनी प्रतिभाओं को,
फिर से जीना आया है।।

अब हम मिलकर कार्य करेंगे,
परिवार ये न्यारा पाया है।
सरंक्षक सा कर्तव्य निभाकर,
मिशन हमारा आया है।।

डॉक्टर नीतू शुक्ला,
प्रधान शिक्षक,
मॉडल प्राइमरी स्कूल बेथर 1,
विकास खण्ड–सिकन्दर कर्ण,
जनपद–उन्नाव।

बेसिक शिक्षा
के
अनमोल रतन

माह के अनमोल रत्नों को नमन

४५० अनुपम सक्सेना (प्र०अ०) प्राथमिक विद्यालय मुरैठी, शमसाबाद, जनपद– फर्रूखाबाद
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_486.html

४५१ भावना सक्सेना प्र.अ., प्राथमिक विद्यालय रजऊ ब्लॉक – फरीदपुर, जनपद – बरेली, राज्य – उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_641.html

४५२ सरिता शर्मा (प्र०अ०) उच्च प्राथमिक विद्यालय सलेमपुर, ब्लॉक – हथगाम, जनपद – फतेहपुर, राज्य – उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_149.html

४५३ अंजली मिश्रा प्राथमिक विद्यालय हंसपुर, अवागढ़ जनपद– एटा, श्राज्य– उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_663.html

४५४ राजीव भटनागर उच्च प्राथमिक विद्यालय, अफजलपुर बुधौती विकास क्षेत्र – दहगवाँ, जिला – बदायूँ
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_147.html

४५५ बलवीर सिंह चौधरी राजकीय माध्यमिक विद्यालय मंगरासी, ब्लॉक – दांतारामगढ़ जनपद – सीकर, राज्य – राजस्थान
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_279.html

४५६ सन्त राम सिंह राजपूत (प्र०अ०) इंग्लिश मीडियम प्राथमिक विद्यालय गाजीपुरवा, विकासखण्ड– उमर्दा जनपद– कन्नौज, उ०प्र०
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_627.html

४५७ ओमकार पाण्डेय (सहायक अध्यापक) उच्च प्राथमिक विद्यालय किरतापुर, ब्लॉक – सकरन, जनपद – सीतापुर, राज्य – उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_340.html

४५८ विद्या यादव (इं.प्र.अ.) क०पू०मा०वि० पापड़ वि०क्षे० – दातागंज
जिला – बदायूँ (उत्तर–प्रदेश)
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_929.html

४५९ अपूर्व कुमार श्रीवास्तव (इंचार्ज प्रधानाध्यापक) पूर्व माध्यमिक विद्यालय सिकटिहवा शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/06/blog-post_2.html

४६० रेनू कमल प्राथमिक विद्यालय (EM) जसपुरापुर सरैंया प्रथम,
ब्लॉक – जलालाबाद, जनपद – कन्नौज, राज्य – उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/06/em.html

४६१ सुभाष चन्द्र कुशवाहा (प्र०अ०) प्रा०वि० शेखनापुर घाट (अंग्रेजी माध्यम),
ब्लॉक : गोसाईंगंज जनपदः लखनऊ, उ०प्र०
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/06/blog-post_3.html

४६२ क्षमा सचान (प्र०अ०) प्राथमिक विद्यालय मोहम्मदपुर, चायल, कौशाम्बी,
उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/06/blog-post_77.html

४६३ जय श्री सैनी सहायक अध्यापक प्राथमिक विद्यालय कुकहा रामपुर,
सिंहपुर – अमेठी
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/06/blog-post_66.html

४६४ रजनी प्रजापति EMUPS खैरटिया, चोपन जनपद – सोनभद्र, राज्य – उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/06/emups.html

अनमोल बाल रत्न

कु0 हिमानी,कक्षा–8,
वर्ष 2017 एवं 2019 में
राज्य स्तर में प्रतिभाग किया।
लोकनृत्य एवं एकांकी
राजकीय कन्या जूनियर
हाईस्कूल सिदोली,
विकास क्षेत्र–कर्णप्रयाग,
जनपद–चमोली।

कु0 कामना, कक्षा–8,
वर्ष 2017 एवं 2019 में
राज्य स्तर में प्रतिभाग किया।
लोकनृत्य एवं एकांकी
राजकीय कन्या जूनियर
हाईस्कूल सिदोली,
विकास क्षेत्र–कर्णप्रयाग,
जनपद–चमोली।

कु0 समीक्षा, कक्षा–8,
वर्ष 2017 एवं 2019 में
राज्य स्तर में प्रतिभाग किया।
लोकनृत्य एवं एकांकी
राजकीय कन्या जूनियर
हाईस्कूल सिदोली,
विकास क्षेत्र–कर्णप्रयाग,
जनपद–चमोली।

कु0 निशा, कक्षा–8,
वर्ष 2017 एवं 2019 में
राज्य स्तर में प्रतिभाग किया।
लोकनृत्य एवं एकांकी
राजकीय कन्या जूनियर
हाईस्कूल सिदोली,
विकास क्षेत्र–कर्णप्रयाग,
जनपद–चमोली।

अनमोल बाल रत्न

विद्यार्थी–फैंसी

जनपद स्तरीय

योग प्रतियोगिता 2020

स्थान–प्रथम

छात्रा कक्षा 6

पूर्व माध्यमिक विद्यालय धारक नगला,
विकास खण्ड–डिलारी,
जनपद मुरादाबाद।
शिक्षिका रंजीता चौहान,
सहायक अध्यापिका,

कु0 साक्षी–कक्षा–8,

वर्ष 2017 एवं 2019 में
राज्य स्तर में प्रतिभाग किया।

लोकनृत्य एवं एकांकी

राजकीय कन्या जूनियर
हाईस्कूल सिदोली,
विकास क्षेत्र–कर्णप्रयाग,
जनपद–चमोली।

कु0 डौली, कक्षा–8,

वर्ष 2017 एवं 2019 में
राज्य स्तर में प्रतिभाग किया।

लोकनृत्य एवं एकांकी

राजकीय कन्या जूनियर
हाईस्कूल सिदोली,
विकास क्षेत्र–कर्णप्रयाग,
जनपद–चमोली।

कु0 तनीषा, कक्षा–8,

वर्ष 2017 एवं 2019 में
राज्य स्तर में प्रतिभाग किया।

लोकनृत्य एवं एकांकी

राजकीय कन्या जूनियर
हाईस्कूल सिदोली,
विकास क्षेत्र–कर्णप्रयाग,
जनपद–चमोली।

विचारशक्ति-1

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की चुनौतियाँ

शिक्षण संवाद

देश के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुहैया कराने के लिए लगभग 34 साल बाद एक नई शिक्षा नीति लाई गई है। शिक्षा नीति के प्राविधानों को देखकर शिक्षा से जुड़े लोगों और आम जनमानस में काफी खुशी है। चूँकि यह पहली शिक्षा नीति है जिसके निर्माण में शिक्षाविदों, शिक्षकों, छात्रों और आम जनमानस की रायशुमारी को भी शामिल किया गया है इसलिए इसे अधिक व्यवहारिक शिक्षा नीति कहा जा सकता है।

शिक्षा नीति में पूर्व प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई परिवर्तन प्रस्तावित किये गए हैं भविष्य में ये प्राविधान कितने कारगर होंगे इसके बारे में कुछ कहना अभी जल्दबाजी ही होगा। परंतु प्रथम चुनौती इन प्राविधानों को धरातल पर उतारना है जिसको लेकर अभी कोई विशेष रोडमैप नहीं दिख रहा है।

नई शिक्षा नीति के प्राविधानों को मूर्तरूप प्रदान करने से पहले हमें शिक्षा अधिकार अधिनियम कानून के प्राविधानों की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करना आवश्यक हो जाता है क्योंकि आर टी ई एक्ट 2009 के प्राविधानों के पूर्ण रूप से लागू हुए बिना नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कई बाधाएँ आ सकती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि आर टी ई एक्ट लागू होने में आने वाली मुश्किलें अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति में न आएँ।

वास्तव में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करवाना केंद्र सरकार के शिक्षा मंत्रालय से लेकर शिक्षा से जुड़े अभिभावक तक सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है और इसमें किसी भी पक्ष की लापरवाही से इस नीति के प्राविधानों के अपेक्षित परिणाम प्रभावित हो सकते हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राफ्ट और प्राविधानों के अध्ययन करने पर अभी भी इसके क्रियान्वयन को लेकर कोई विशेष रोडमैप नहीं दिखता है ऐसे में इस शिक्षा नीति को कैसे लागू किया जाना है इसको लेकर किसी भी राज्य और शिक्षाधिकारी के पास कोई संतोषजनक जबाब नहीं है।

अगर हम पिछली शिक्षा नीति और केंद्र तथा राज्य के शैक्षिक क्रियाकलापों और संबंधों का अध्ययन करते हैं तो केंद्र केवल सलाहकार की भूमिका में नजर आता है और क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदारी राज्य पर छोड़ देता है। 1994 तक अस्तित्व में रहे केंद्रीय शिक्षा परामर्शदाता बोर्ड (सी ए बी ई) के खत्म होने के बाद बचे शैक्षिक प्राधिकरणों की सीमित भूमिका के चलते राज्य और केंद्र के समन्वय की कमी से शिक्षा का काफी नुकसान हुआ है। चूँकि 1976 में शिक्षा संविधान में समवर्ती सूची में जोड़ा गया था इसलिए अब शिक्षा की जिम्मेदारी राज्य और केंद्र को सामूहिक रूप से लेने की पहल की आवश्यकता है। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन पी ई) 1986 और अपडेटेड क्रियान्वयन कार्यक्रम (पी ओ ए) 1992 की खामियों और असफलताओं के कारणों को साथ रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 के क्रियान्वयन का बेहतर प्लेटफॉर्म बनाया जा सकता है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्राविधानों को लागू करने में राज्यों की भौगौलिक स्थिति, भाषायी स्थिति, जनसंख्या घनत्व, वर्तमान शैक्षिक इंफ्रास्ट्रक्चर और वर्तमान गुणवत्ता भी

महत्वपूर्ण घटक हैं इसलिए प्रत्येक राज्य को नई शिक्षा नीति को लागू करने हेतु अलग–अलग तरह की नीति की आवश्यकता होगी साथ ही उन्हें केंद्र से अलग–अलग तरह की सहायता की अपेक्षा होगी। ऐसे में केंद्र द्वारा प्रदत्त किसी सामान्य नियमावली से सम्पूर्ण देश मे शिक्षा के उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त करना मुश्किल भरा हो सकता है साथ ही राज्यों को अपनी तरह से क्रियान्वित करने की स्वतंत्रता से भी शिक्षा नीति के मूल उद्देश्य को भटका सकती है ऐसे में मिलजुलकर काम करने हेतु एक बेहतर मंच और रणनीति का निर्माण अपेक्षित है।

हालाँकि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ज्यादा बेहतर क्रियान्वयन के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तरों पर ज्यादा सक्षम समितियों के निर्माण का प्रस्ताव दिया गया है परंतु अभी भी इन समितियों और राज्य शैक्षिक तंत्रो की भूमिका और अधिकारों के सम्बन्ध में निर्णय लिया जाना शेष है। विगत एक दशक में शिक्षा के विकास, कार्ययोजना निर्माण, शोध और चिन्तन के लिए कार्यरत एन सी. ई. आर. टी., एस. सी. ई. आर. टी., न्यूपा, एस आई ई टी जैसी संस्थायें हाशिए पर दिख रही हैं क्योंकि आर टी ई एक्ट लागू करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने की जल्दबाजी में राज्यों के शिक्षाधिकारियों पर अत्यधिक दबाब बनाया गया। साथ ही जिला प्रशासन की जबाबदेही को तय करने के कारण शिक्षा में जिलाधिकारियों के हस्तक्षेप के चलते इन संस्थाओं की शैक्षिक शोध की अनुशंसा को अलग रखकर एक नई तरह की कार्यप्रणाली विकसित करने की कोशिश की जाने लगी। अगर ऐसा ही रणनीति नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में अपनाई गई तो इस नीति के प्राविधानों को यथारूप में लागू हो पाने में काफी मुश्किल हो सकती है या यूँ कहें कि प्रत्येक राज्य में शिक्षा नीति अलग तरह से लागू होकर समरूपता को खत्म कर देगी और यह भी सम्भव है कि अलग–अलग राज्यों में शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में काफी अंतर आ जाए।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने में केंद्र सरकार, केंद्रीय शिक्षा विभाग, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, राज्य सरकार, राज्य शिक्षा विभाग शिक्षा अधिकारी, शिक्षक और अभिभावकों को एक साथ आकर काम करना होगा। क्रियान्वयन की जिम्मेदारियों को एक–दूसरे पर छोड़ देने की बजाय लागू करने में आ रही मुश्किलों के समाधान के लिए सबको मिलकर काम करना होगा। केंद्र को अलग–अलग राज्यों में आ रही अलग–अलग तरह की समस्याओं को समझते हुए उनके हिसाब से कार्यक्रम का रोडमैप तय करना होगा। सैद्धान्तिक प्रस्तावों को व्यवहारिक रूप से विद्यालय स्तर तक लागू करने में समय–समय पर कई अहम बदलाव और सुधार भी करने होंगे। लागू करने के बाद विद्यालय स्तर से (बिना कार्यवाही के भय के) परिणामों का प्रामाणिक डेटा सीधे किसी पोर्टल के माध्यम से संकलित कर समय–समय पर उसका विश्लेषण और सुधार हेतु प्रयास करना होगा।

राज्य शिक्षा अधिकारियों से उनके राज्य में आ रही व्यवहारिक दिक्कतों के त्वरित निदान हेतु एक मजबूत चौनल राज्य और केंद्र के बीच एक्टिव मोड में क्रियान्वित रखना आवश्यक होगा। तब कहीं हम इस शिक्षा नीति के उद्देश्य को प्राप्त करते हुए भारत की शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय पटल तक ले जाने में सफल हो सकेंगे।

सादर।

अवनीन्द्र सिंह जादौन
संयोजक मिशन शिक्षण संवाद
उत्तर प्रदेश

विचारशक्ति–2

बच्चों को स्टेटस सिंबल न बनाएँ

शिक्षण संवाद

उस रोज अखबार में आलोक के अचानक गायब हो जाने की खबर पड़ी तो हैरान रह गई। सोचा, जरूर श्रीमती अस्थाना के होनहार पुत्र का किसी ने अपहरण कर लिया होगा, दूसरे दिन जब श्रीमती अस्थाना से मिलने गई तो पता चला कि आलोक मिल गया है। वह गायब नहीं हुआ था बल्कि अपनी माँ के डर से रेलवे स्टेशन के वेटिंग रूम में छुप कर बैठ गया था।

दरअसल श्रीमती अस्थाना अपनी ननद को अपनी प्रतियोगी मानती थीं। ऐसे में जब उनकी ननद के बेटे ने इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला ले लिया तो उन्होंने भी ठान लिया कि वे भी अपने आलोक को डॉक्टर बनाएँगी क्योंकि अगर उनका बेटा कुछ नहीं बन सका तो उनकी तो सबके सामने नाक कट जाएगी। बस वे आलोक को दिन रात पढ़ाई के लिए डराने धमकाने लगीं कि उसे किसी भी कीमत पर क्लास में फर्स्ट आना ही है। ऐसे में इस साल जब काफी मेहनत के बावजूद आलोक क्लास में फर्स्ट स्थान नहीं ला सका तो माँ द्वारा पिटाई के डर से वह घर से भाग गया।

सच, बड़ा दुख होता है जब पता चलता है कि आजकल ज्यादातर बच्चे अपने माता–पिता के लिए स्टेटस सिंबल बनते जा रहे हैं। बच्चों की आकांक्षाओं का ख्याल रखने वाला कोई नहीं होता उल्टा माता–पिता उनसे या आशा करते हैं कि वह कुछ बनकर उनका सिर गर्व से ऊँचा करें।

ऐसे महत्वाकांक्षी माता–पिता बच्चों की छोटी से छोटी गलती भी बर्दाश्त नहीं कर पाते। उन्हें यह लगता है कि उनकी संतान इतनी काबिल हो चुकी है कि जीवन में उससे कहीं कोई गलती न हो और वह कभी किसी से ना हारे। हर गलती के बाद दुत्कार, व्यंग्यात्मक शब्द या लम्बे– चौड़े भाषण के बाद कई बच्चे तो हीन भावना से ऐसे ग्रसित हो जाते हैं कि सफलता उनसे कोसों दूर भागने लगती है और कई बच्चे ऐसे भी होते हैं जो अपने माता–पिता की इच्छा के अनुरूप स्वयं को ढालना तो सीख लेते हैं। लेकिन आगे चलकर अपनी कुंठित भावनाओं का प्रर्दशन विद्रोही और अशिष्ट बनकर करते हैं।

भोजन, कपड़े, खिलौने के अलावा बच्चों को स्नेह और भावनात्मक सुरक्षा की भी जरूरत होती है। जब बच्चे से परिवार में कुछ आकांक्षाएँ जन्म लेने लगती हैं तो बच्चे के मन में इसका बुरा असर पड़ता है। वो भी अपने परिवार से अपने हर कार्य के बदले में कुछ उम्मीदें करने लगता है। उसे घर भावात्मक सुरक्षा देने वाला स्थान नहीं प्रतीत होता और वो एक ऐसे स्थान की तलाश शुरू कर देता है, जहाँ उसे भावनात्मक संतुष्टि प्राप्त हो या जहाँ वह अपने असंतोष को को व्यक्त कर सके।

अपने बच्चों को स्टेटस सिंबल बनाने के बजाय माता–पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों का उचित मार्गदर्शन करें, ताकि बच्चों का बौद्धिक व मानसिक विकास सही ढंग से हो सके।

आठ वर्षीय प्राची को अपनी नौकरानी की मैले–कुचैले कपड़े वाली बिटिया मधु के साथ खेलना अच्छा लगता था। उसे जब भी मौका मिलता वो मधु का हाथ पकड़कर उसे बगीचे के किसी कोने पर ले जाकर बैठ जाती और घंटों उसके साथ बतियाती रहती।

प्राची की माँ को यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि उनकी लाडली बेटी एक नौकरानी की बेटी के साथ खेले। वो सदैव प्राची को रोकती टोकती रहतीं, लेकिन मधु के प्रति प्राची का लगाव निरंतर बढ़ता ही जा रहा था। माँ से छुपकर उसे मिठाइयाँ खिलाकर वह काफी संतुष्ट होती थी। प्राची की माँ सदैव बौखलाई हुई रहती। उन्हें प्राची का निम्न क्षेणी के लोगों के साथ हँसना बोलना बिल्कुल भी पसंद नहीं था। वे सदैव इस बात से भय खाती थीं कि समाज के किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति ने प्राची को नौकरानी की बेटी के साथ देख लिया तो उनकी माँ की मर्यादा मिट्टी में मिल जाएगी।

प्राची को जब काफी समझाने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ तो तंग आकर प्राची की माँ ने उस नौकरानी को फटकार लगाई और आदेश दिया की वह अपनी बेटी को अपनी साथ न लेकर आया करें।

प्राची को माँ की इस क्रूर नीति से बेहद सदमा लगा और वह उदास रहने लगी। प्राची ने अपने को पढ़ाई में व्यस्त कर लिया। उसकी माँ उसे पढ़ाई में व्यस्त देखकर संतुष्ट हो गई। उन्हें लगा कि उन्होंने अपनी बेटी को सही शिक्षा दी है लेकिन वो नहीं जानती थीं कि उन्होंने ना सिर्फ प्राची का विश्वास खो दिया था बल्कि अपने बेटी की नजरों से भी गिर गई थीं।

हर बच्चे की अपनी क्षमता होती है यदि वह पढ़ाई में अव्वल नहीं है तो उसमें जरूर एक खिलाड़ी, एक चित्रकार, गायक, पेंटर के गुण विद्यमान होंगे।

अपने बच्चों से जरूरत से ज्यादा उम्मीद कर हम उनके बचपन को तो कुंठित करते ही हैं उनकी युवावस्था पर भी प्रश्न चिह्न लगा देते हैं। कुंठित बच्चों के गुण उभरकर सामने नहीं आते बल्कि उनके अंतर में ही कहीं दम तोड़ देते हैं।

टतः बच्चों की कोमल भावनाओं को अपनी आकांक्षाओं का शिकार न बनने दें बल्कि उनमें व्याप्त गुणों को टटोलने का प्रयास करें। साथ ही जिस क्षेत्र में उनकी रुचि है उस क्षेत्र में उन्हें आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करें। ऐसा करने से आप कभी निराश नहीं होंगे बल्कि पाएँगे कि आपके बच्चों ने अपनी कार्य–कुशलता से आपको समाज में ऊँची प्रतिष्ठा दिलाई है।

रजनी दीक्षित,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय गौरा,
विकास खण्ड–मोहनलालगंज,
जनपद–लखनऊ।

विचारशक्ति–3

स्वास्थ्य का शत्रु जंकफूड

शिक्षण संवाद

आज जो बात मुझे सर्वाधिक चिंतित करती है वो है भारत के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति का जंकफूड प्रेम। गत वर्ष, जब मैं कक्षा में पोषण से सम्बंधित पाठ पढ़ा रही थी तो मैंने बच्चों से पूछा कि आप लोग चाऊमीन, बर्गर आदि खाते हैं? जबाव चौंकाने वाला था। लगभग 90% बच्चों का जबाव था कि वे ये सब हर दूसरे दिन खाते हैं।

फिर मैंने पूछा आप लोग विद्यालय से अतिरिक्त घरों पर फल खाते हैं। पुनः चौकाने वाला जवाब। बहुत ही कम संख्या ने जवाब हाँ में दिया। जो दिहाड़ी मजदूर वर्ग के लोग हैं व गाँव जैसे सुंदर वातावरण में भी खानपान में जंकफूड का विशेष स्थान होना गंभीर विषय है। कोल्डड्रिंक, समोसा, चाट, बर्गर, मोमोज आदि का ग्रामीण परिवेश में विशेष स्थान होना भविष्य में घातक सिद्ध हो सकता है।

एसोचौम की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2020 के अंत तक भारत में फास्ट फूड का कारोबार 2500 करोड़ से अधिक हो जाएगा। एक सर्वे में पाया गया है कि हमारे देश में कक्षा 6–10 में पढ़ने वाले बच्चों में से मात्र 18 प्रतिशत बच्चे ही रोजाना फल खाते हैं।

हमें यह याद रखना होगा कि हमारे देश में शहरों, कस्बों और गाँवों में जंकफूड प्रेम के कारण प्रतिरोधक क्षमता में भारी कमी आई है। इंडियन जनरल ऑफ पब्लिक हेल्थ की रिपोर्ट

के अनुसार ग्रामीण परिवेश के स्कूली बच्चों में जंकफूड के प्रति जो प्रेम है वह आँकड़ों से दिखाई देता है। बच्चों में इस प्रकार के भोजन का असर उनमें स्पष्ट दिखाई देता है। कम उम्र में उच्च रक्तचाप, मधुमेह आदि जैसे रोग अब साधारण सी बात है। बच्चों में अच्छे पोषक भोजन के प्रति प्रेम जाग्रत करने की जिम्मेदारी अभिभावकों की होती है। वे अपनी व्यस्त दिनचर्या के कारण ऐसे खाद्य पदार्थों से ऑनलाइन ऑर्डर से ही काम चला लेते हैं पर जो पोषण बच्चों के साथ उनको स्वयं भी चाहिए, उसका क्या?

आज की स्थिति से सीख लेकर दूध, मौसमी फलों खासकर विटामिन सी, ई के स्त्रोत वाले फल, हरी सब्जियों आदि को खानपान में आवश्यक रूप से शामिल किया जाए। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मानसिक रूप से भी स्वस्थ होना अतिआवश्यक है। लोगों को योग और हल्की फुल्की कसरत को भी अपने जीवन में विशेष स्थान देना होगा। शिक्षकों को अपने परिवार के साथ–साथ विद्यालय के बच्चों व अभिभावकों को भी जागरूक बनाने का कार्य अब और अधिक गति से करना होगा।

प्रत्येक भारतीय को अपनी संस्कृति पर गर्व होना चाहिए। पाश्चात्य संस्कृति के पीछे दौडते हुए जो जंकफूड की गलत आदत का निर्माण किया है उसे त्याग कर भोजन में दूध, मेवे, फलों, हरी सब्जियों आदि को अपनाकर अपनी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं। जो कमजोर वर्ग के लोग हैं वे चाऊमीन, बर्गर की जगह अगर उतने ही बजट में फल अपने बच्चों को खिलाते तो उनमें प्रतिरोधक क्षमता का विकास होगा।

साथ ही प्रत्येक भारतीय को जागरूक व जिम्मेदार होना चाहिए। जो अपनी लापरवाही से दूसरे लोगों के लोगों के लिये घातक सिद्ध हो रहे हैं, हमारी न्यापालिका में ऐसे लोगों के लिए भी सजा का प्रावधान होना चाहिये।

एक शिक्षक के नाते मैंने अपने विद्यार्थियों में अभिभावकों सहित स्वच्छ व स्वस्थ आदतों का निर्माण किया है। उन्हें जागरूक बनाया है। आज अधिकांश अभिभावक अशिक्षित हैं परन्तु जागरूक हैं, जिम्मेदार हैं। वे इस समय में सामाजिक दूरी का पालन करते हुए अपने और अन्य बच्चों को भी पढ़ाई में सहयोग कर रहे हैं। भोजन का भी विशेष ध्यान रख रहे हैं परन्तु वे इसे अपनी दिनचर्या में पूर्णतः शामिल करें तभी परिणाम सुखद होंगे।

सुमन शर्मा,
इं0 प्रधानाध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय माँकरौल,
विकास खण्ड इगलास,
जनपद–अलीगढ़।

बात महिला शिक्षकों की

राष्ट्र का नव निर्माण कार्यकर्ता

"बात तो कुछ ऐसी ही होती है, महिला शिक्षकों के चाव की।
घर तो सँवारती ही हैं, विद्यालयों को भी संस्कार शाला बना देतीं हाव-भाव की।।"

शिक्षण संवाद

महिला शिक्षकों को सम्पूर्ण राष्ट्र का नव निर्माण कार्यकर्ता बन जाना चाहिए। महिला शिक्षक के अन्तर्गत घर तथा बाहर दोनों का कार्यभार होता है तथा पूर्ण रूप से उसको सुचारू रूप से काम करना चाहती है।

सर्वप्रथम शिक्षक की शैक्षिक योग्यता पूर्ण होनी चाहिए। जिससे शिक्षक अपने कार्य को सर्वश्रेष्ठ रूप से कर सके। एक शिक्षक के मानवीय गुण जैसे–सच्चाई, ईमानदारी, सच्चरित्रता, धैर्य, नैतिकता, सहानुभूति, त्याग, प्रसन्नचित्रता, विनम्रता, सृजनात्मकता आदि होने चाहिए। महिला शिक्षक को अधिक प्रभावशाली वक्ता होना चाहिए क्योंकि वार्तालाप से हम दूसरे को प्रसन्नचित्त कर सकते हैं।

शिक्षक को आत्मविश्वासी होना बहुत आवश्यक होता है। अगर शिक्षक स्वयं को आत्मविश्वासी बना ले तो वह अपने सभी विद्यार्थियों को भी विश्वास में उतार सकता है। शिक्षक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान हो तो वह विद्यार्थियों के हर प्रकार के प्रश्नों का उत्तर दे सकता है तथा उसको वह सन्तोषपूर्वक समझा सकता है। महिला शिक्षकों को अपने व्यवसाय के प्रति रुचि निष्ठा परिपक्व रूप में होनी चाहिए। अपने अध्यापन कार्य यानी शिक्षण कार्य में विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करके विद्यार्थियों को पढ़ाना है। जैसा विद्यार्थी हो हमें उसको उसी रूप में पढ़ाकर आगे बढ़ाना है। हमारी शिक्षण सामग्री का प्रयोग भी रुचिपूर्वक होना चाहिए। हमारा जो लेसन प्लान(पाठ योजना) है उसकी सामग्री सुन्दर तथा आकर्षित होनी चाहिए। परन्तु महँगी नहीं होनी चाहिए। कबाड़ से जुगाड़ वाला रूप होना चाहिए।

> महिला शिक्षक को अधिक प्रभावशाली वक्ता होना चाहिए क्योंकि वार्तालाप से हम दूसरे को प्रसन्नचित्त कर सकते हैं।

महिला शिक्षक के लिए आवश्यक है कि मनोविज्ञान का ज्ञान हो तो अध्यापन कार्य अधिक आकर्षित होगा क्योंकि बच्चों में लड़के व लड़कियाँ दोनों होती हैं। लड़कियाँ तो अपनी महिला शिक्षक से हर तरह की बात कर सकती हैं। किसी भी तरह की समस्या होने पर।

महिला शिक्षक को समय का पाबन्द होना चाहिए। महिला को अपनी समय सारिणी घर की व विद्यालय की दोनों बना लेनी चाहिए। जिससे समय सही रूप से व्यतीत हो जाए क्यूँकि महिला के लिए घर भी अति आवश्यक है जिस प्रकार उसका अपना विद्यालय।

हमारी छात्रों के प्रति प्रेम व सहानुभूति का आदान होना चाहिए। प्रेमपूर्वक हम छात्रों से प्रत्येक प्रकार का कार्य करा सकते हैं तथा उनको पढ़ाना भी आसान हो जाता है। जब हम उसके साथ प्रेम का व्यवहार करते हैं। व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण में पहले शिक्षक की वेशभूषा आती है। बच्चा शिक्षक की वेशभूषा को बहुत ध्यानपूर्वक देखता है तथा अपने ऊपर भी कभी–कभी उसको फॉलो करते हैं।

अच्छा स्वास्थ्य, प्रसन्नमुख, उच्च गुणवत्ता, नेतृत्वशक्ति, धैर्यवान, विनोदप्रिय, उत्साह तथा आत्मसम्मान से भरा होना चाहिए। सभी के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का गुण भी होना चाहिए। जैसे– विद्यार्थियों के साथ सम्बन्ध, साथी अध्यापकों के साथ सम्बन्ध, अभिभावक के साथ सम्बन्ध, समाज के साथ सम्बन्ध होना चाहिए।

वैसे तो महिला शिक्षक सरलता से हर बच्चे के घर चली जाती हैं। महिला शिक्षिका घर में बैठकर उनकी व्यक्तिगत समस्या भी सुन सकती हैं वो चाहे किसी भी प्रकार की हो। वह ध्यानपूर्वक सुनकर समाधान करने की कोशिश कर सकती है।

महिला शिक्षिका अपनी पूरी मेहनत व लगन से चाहती है कि उसके घर की व्यवस्था व विद्यालय की व्यवस्था सही रूप में आगे बढ़ती रहे।

अरशे जहाँ,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय बादौली बांगर,
विकास खण्ड–दनकौर,
जनपद–गौतमबुद्ध नगर।

बाल कविता

शिक्षण संवाद

मेरा सपना

पापा को है ऑफिस जाना
उनको भी हैं काम अनेक,
मम्मी को है कैरियर बनाना
चैन नहीं है घड़ी एक।

कामकाज की भाग दौड़ में
सबको है पैसा खूब कमाना,
गाड़ी, मोटर, बंगला हो
अपना तो स्टेटस बनाना।

मेरे मन को कोई न जाना
है मेरा एक नन्हा सा सपना,
गाड़ी, बंगला ना हो बड़ा खिलौना
मुझे तो तुम्हारे संग में है रहना।

पापा के संग है हँसना
दादा के संग है बतियाना,
कोई मुझे चिढ़ाए तो
माँ के आँचल में है रोना।

चाचा के संग करनी है नादानी
जहाँ रोज सुनाएँ दादी नानी,
मुझे परियों की नई कहानी
ऐसा है मेरा एक सपना।

नींद ना आए मम्मी लोरी सुनाए
मैं रूठ जाऊँ बुआ मुझे मनाए,
जो राखी मुझे पहनाए
हो अपनी भी एक बहना।

चाचा चाची हों नानी और नाना
ताई और ताऊ हो जहाँ,
मामा, मौसी का हो आना जाना
ऐसा हो घर अपना।

नहीं चाहिए धन, दौलत व पैसा
हमें चाहिए ढेर सारा प्यार,
समय तुम्हारा थोड़ा सा
ढेरों सी मस्ती थोड़ा सा डाँटना

सही गलत का भेद बता दो
अच्छी आदतें संस्कार सिखा दो,
रोबोट नहीं है हमें बनाना
बच्चे हैं हम बच्चा ही रहने दो।

मिल कर रहें हम साथ सब
ना हो किसी को दूर जाना,
छोटों का प्यार बड़ों का कहना
ऐसा हो घर प्यारा अपना।

रंजना डुकलान,
सहायक अध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय धौडा
विकास खण्ड–कल्जीखाल,
जनपद–पौड़ी गढ़वाल।

बाल कविता

शिक्षण संवाद

छोटे से डब्बू जी..
छोटी सी ड्रेस में..
छोटा सा बस्ता ले...
छोटे – छोटे कदमों से...
स्कूल को जाते...
प्यारी – प्यारी बातों से...
सबको लुभाते...
तोतली जुबान से...
कविता सुनाते...
काम जो भी मिलता...
झट कर दिखलाते...
सबसे पहले याद करते...
पाठ को सुनाते...
सबके साथ मिलकर...
मिड–डे–मील खाते...
खाली घण्टा जब हो तो...
पुस्तकालय जाते...
गीत–कहानी पढ़ते...
औरों को सुनाते...
छुट्टी का घण्टा बोले...
झट बस्ता उठाते...
हँसते – खेलते डब्बू जी...
घर लौट आते....
छोटे से डब्बू जी...
सबके मन को भाते...!!

नन्हें मन की अभिलाषा

छुट्टी आयी, छुट्टी आई,
बच्चों की खुशियाँ लाई,
खो ल खू ब खो लें गे,
किसी की नहीं सुनेंगे।
गिल्ली डंडा हुआ पुराना,
गेंद बल्ले का गया जमाना,
पापा मुझको कंप्यूटर ला दो,
सपना मेरा पूरा कर दो।।
नई–नई चीजें खोजूँगा,
नन्हा वैज्ञानिक बनूँगा,
सबका नाम रोशन करूँगा,
मै आदर्श बेटा बनूँगा।।

नम्रता श्रीवास्तव, प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय बड़ेह स्योढ़ा,
विकास खण्ड–महुआ,
जिला–बाँदा।

दीपक कौशिक,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय भीकनपुर बघा,
विकास क्षेत्र–कुंदरकी,
जनपद–मुरादाबाद।

टी. एल. एम. एक, भाषा अनेक

सामग्रीः– पुराना फाइल कवर, पुराने कैलेण्डर, कुछ चित्र, कलर पैन, फेविकोल और कैंची।

बनाने की विधिः–

सर्वप्रथम फाइल कवर को पुराने कैलेण्डर से कवर कर लें। फिर चित्र में दिखाए गए अनुसार एक लम्बी पट्टी काटकर उसमें चार आयताकार बॉक्स काट लें। अब कैलेण्डर को उल्टा मोड़कर चार लम्बी पट्टियाँ काट लें जोकि बॉक्स में फिट आ जाएँ। एक पट्टी पर विभिन्न चित्र चिपका लें। फिर एक पट्टी पर इन चित्रों के नाम हिन्दी में, दूसरी पट्टी पर अंग्रेजी में व तीसरी पट्टी पर संस्कृत में अलग–अलग क्रम में लिख दें। अब इन चारों पट्टियों को चारों बॉक्स में लगा दें। हम इन चारों पट्टियों के दूसरी तरफ़ भी अन्य चित्र लगाकर शब्द लिख सकते हैं।

टी. एल. एम. का प्रयोगः–

चित्र वाली पट्टी में बच्चों से किसी भी चित्र का नाम पूछें। जैसे हमने पेड़ के चित्र पर अंगुली रखकर पूछा कि ये क्या है? बच्चों ने बताया – पेड़। अब हम हिन्दी वाली पट्टी में से पेड़ शब्द खोजकर (पेड़ के सामने), पट्टी को ऊपर नीचे करके मिलान कराएँगे। इसके बाद पेड़ को अंग्रेजी व संस्कृत में क्रमशः **tree** व वृक्ष कहते हैं यह बताकर अन पट्टियों का भी मिलान कराएँ। इस प्रकार चित्रों को देखकर, तीनों भाषाओं में उनसे सम्बन्धित शब्दों को मिलाने का अभ्यास बच्चों से कराया जाए। इस प्रकार खेल– खेल में बच्चों के तीनों भाषाओं के शब्द कोष में वृद्धि होगी।

टी. एल. एम. का लाभः–

1. यह टी. एल. एम. कक्षा 3, 4 एवं 5 के लिए उपयोगी है।
2. बच्चे चित्रों को पहचानते हैं और हिन्दी में उनके नामों को भी जानते हैं, उनके इस पूर्वज्ञान का उपयोग करते हुए अंग्रेजी व संस्कृत में भी उनके नामों का ज्ञान कराया जा सकता है।
3. इस टी. एल. एम. के माध्यम से तीनों भाषाओं का ज्ञान खेल – खेल में बच्चों को कराया जा सकता है।

zero investment
T.L.M.

WORLD OF TLM

ऋतु सिंघल,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अंबेहटा चांद–1,
विकास खण्ड–रामपुर मनिहारान,
जनपद सहारनपुर।

टी. एल. एम. एक, भाषा अनेक

सींकों का कमाल/गुणा है कितनी मज़ेदार

निर्माण सामग्री– चार्ट पेपर, स्केज पेन आदि।

विषय– गणित
कक्षा – प्राथमिक स्तर

परिचय एवं प्रयोग विधि–

पहाड़े अक्सर रटे जाते हैं या किसी विधि से आसानी से लिखे जा सकते हैं, पर इस प्रकार आप पहाड़े में होने वाली संख्याओं की गुणा और इसके एल्गोरिथम को नहीं समझ पाते हैं।

बच्चों, आप झाड़ू की सींक या तीलियों/छड़ियों/रेखाओं से पहाड़ों के पूरे संसार को खोज सकते हैं। इसके लिए संख्याओं के अनुसार सींकों को आड़ा और खड़ा रखकर इन सींकों के कटान/संयोजन बिन्दुओं को गिन लेते हैं, जिससे इन संख्याओं की गुणा प्राप्त हो जाती है। यह मज़ेदार तरीके से गुणा करने का एक तरीका है। इसके द्वारा केवल गिनना जानने वाले बच्चे भी गुणा कर सकते हैं और पहाड़े लिख सकते हैं।

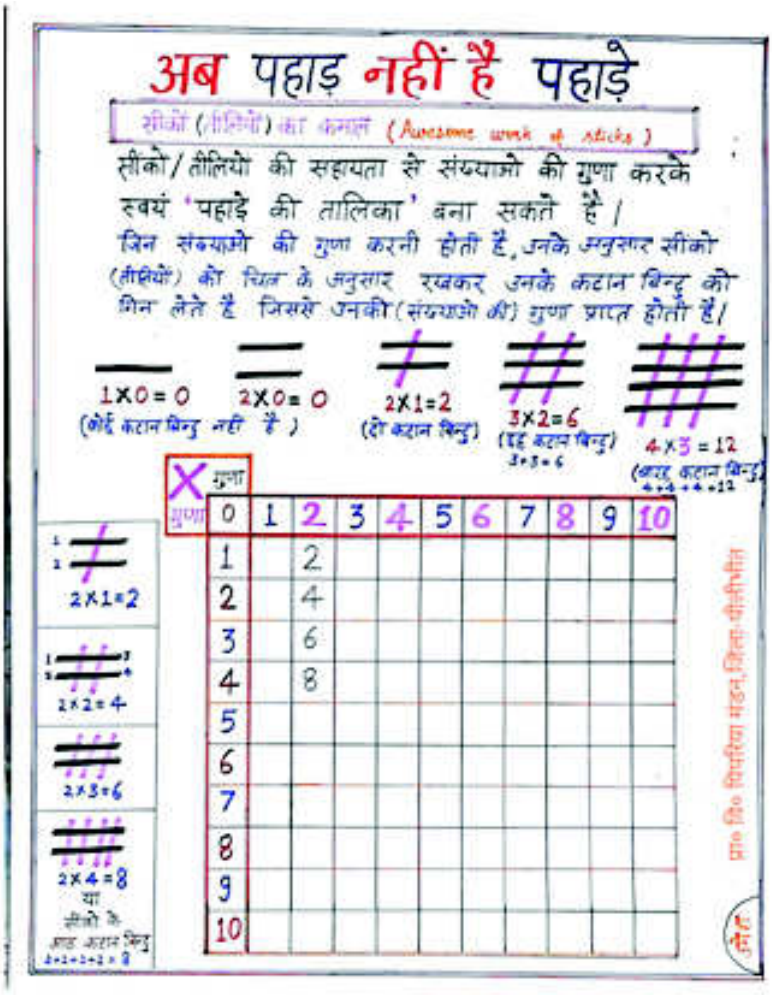

जिन संख्याओं की गुणा करनी होती है, उन्हें चित्रों के अनुसार सींकें रखकर उनके कटान बिन्दुओं को गिन लेते हैं। 10 या 10 से अधिक वाली दहाई की संख्या के लिए मोटी सींक लेते हैं या अलग रंग की रेखा खींचते हैं। इसी प्रकार सैकड़ा, हजार, दस हजार आदि स्थानीय मान वाली संख्या के लिए मोटी सींक या अलग रंग की रेखा खींचते हुए कटान बिन्दुओं को गिन लेते लेते हैं, इन कटान बिन्दु के जोड़/गिनती में दो अंक आने पर एक अंक को स्थानीय मान के अनुसार आगे की संख्या में जोड़ देते हैं।

जैसे –

1 0 = 0 (सींक का कोई कटान बिन्दु नहीं है ।)

2 0 = 0 (सींकों का कोई कटान बिन्दु नहीं है ।)

2 1 = 2 (सींकों के दो कटान बिन्दु हैं ।)

2 2 = 4 (सींकों के चार कटान बिन्दु हैं ।)

12 1 = 12 (सींकों के दहाई स्थान पर एक कटान बिन्दु और इकाई स्थान पर दो कटान बिन्दु हैं ।)

12 2 = 24 (सींकों के दहाई स्थान पर दो कटान बिन्दु और इकाई स्थान पर चार कटान बिन्दु हैं ।)

12 3 = 36 (सींकों के दहाई स्थान पर तीन कटान बिन्दु और इकाई स्थान पर छह कटान बिन्दु हैं ।)

23 12 = 276 (सींकों के सैकड़ा स्थान पर दो कटान बिन्दु, दहाई स्थान पर सात कटान बिन्दु और इकाई स्थान पर छह कटान बिन्दु हैं ।)

123 12 = 1476 (सींकों के हजार स्थान पर एक, सैकड़ा स्थान पर चार कटान बिन्दु, दहाई स्थान पर सात कटान बिन्दु और इकाई स्थान पर छह कटान बिन्दु हैं ।)

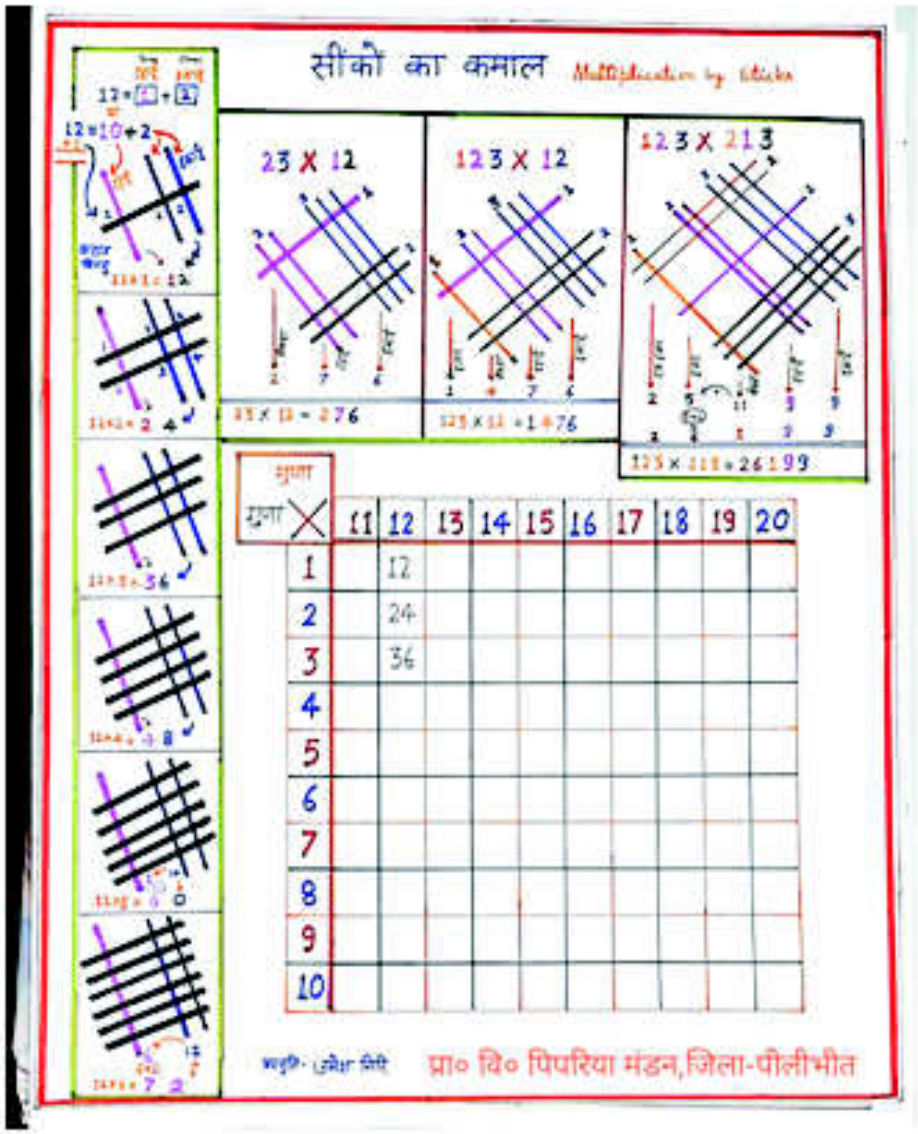

उमेश गिरि गोस्वामी,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय
पिपरिया मंडन,
विकास क्षेत्र– बरखेड़ा,
जनपद– पीलीभीत।

गतिविधि

लंगड़ी टांग पर जोड़ घटाओ

शिक्षण संवाद

बच्चों को लंगड़ी टांग का खेल बहुत पसंद है। यह गतिविधि इसी खेल के ऊपर आधारित है।

करना क्या है – चित्र के अनुसार खाने बनाकर उसमें सवाल लिखेंगे। जैसे ही आप पहले ख़ाने में कूदेंगे उसके नीचे जो सवाल लिखा हुआ होगा, उसका उत्तर बोलना है। अगले खाने में आप तभी कूदोगे, जब आप उस सवाल का उत्तर बोलोगे। इसी तरह से सवालों के उत्तर देते हुए पूरा खेल खेलोगे। जो बच्चा सभी सवालों के उत्तर देकर आगे बढ़ता जाएगा वह बच्चा विजयी होगा। यह खेल दो बच्चों में भी हो सकता है और उससे ज्यादा बच्चों में भी। एक बारी खत्म होने पर दूसरी बारी में दूसरा बच्चा पहले बच्चे के लिए उसमें सवाल बदल सकता है।

जीरो इन्वेस्टमेंट पर बहुत अच्छा नवाचार है जिसे बच्चे रुचि पूर्वक खेलते हुए करते हैं– जोड़ – घटाव। खेल का खेल और पढ़ाई की पढ़ाई।

पूनम गुप्ता,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय धनीपुर
(अंग्रेजी माध्यम),
विकास खण्ड–धनीपुर,
ज्नपद–अलीगढ़।

पर्यायवाची शब्द दोहावली

1.आग
पावक अनल हुताशन, अग्नि कहो या आग।
पुरा पाषाण काल से, मानव के है साथ।।

2.मूर्ख
अज्ञ अज्ञानी बेसमझ, पागल अनभिज्ञ मूढ़।
बहस न इनसे कीजिये, होते हैं ये मूर्ख।।

3.अतिथि
अतिथि पहुना गृहागत, अभ्यागत मेहमान।
स्वागत इनका कीजिये, ये हैं देव समान।।

4.आँख
आँख नेत्र लोचन नयन, चक्षु विलोचन नैन।
शीतल जल से धोइये, आये मन को चैन।।

5.आकाश
अम्बर गगन आकाश नभ, व्योम अभ्र आसमान।
देखो सूरज उग गया, आया नया विहान।।

6.आम
आम आम्र अमृतफल, फलश्रेष्ठ अम्ब रसाल।
गर्मी का मौसम लगे, फल आये हर डाल।।

7.इन्द्र
इन्द्र पुरन्दर सुरपति, शुक्र देवेश सुरेश।
हम सब की रक्षा करें, ब्रह्मा विष्णु महेश।।

8.ईश्वर
ईश्वर प्रभु परमात्मा, परमेश्वर जगदीश।
भगवन दीनानाथ को, चलो नवाएं शीश।।

9.कमल
जलज कमल अम्बुज नलिन, पंकज अरविन्द कंज।
शतदल से पूजा करो, भागे दुःख और रंज।।

10.ताकतवर
सबल बली ताकतवर, बलशाली बलवान।
ऊर्जा संचित कीजिये, करिये नित व्यायाम।।

11.बादल
बादल वारिद जलद घन, नीरद मेघ पयोद।
दादुर बोले रात में, टिम टिम करे खद्योत(जुगनू)

12.प्रार्थना
याचना विनती प्रार्थना, विनय निवेदन अर्ज।
मात–पिता के चरण में, मिल जाता है स्वर्ग।।

13.पानी
पानी नीर उदक जल, वारि सलिल पय तोय।
बूँद–बूँद से घट भरे, बिन पानी सब खोय।।

14.अत्याचार
अत्याचार दुराचरण, अनाचार दुराचार।
इनसे खुद को बचाइये, बढ़े प्रीत व्यवहार।।

15.कोयल
कोयल कोकिल काकली, पिक श्यामा कलघोष।
इसकी मीठी कूक से, भागे मन का रोष।।

16.कौआ
काक करठ वायस पिशुन, कौआ काग एकाक्ष।
कर्कश स्वर में बोलता, जैसे करे कटाक्ष।।

17.तोता
तोता शुक सुग्गा सुआ, दाड़िमप्रिय और कीर।
मिट्ठू मियाँ पुकारते, प्रिय इनको फल खीर।।

18.गंगा
गंगा जान्हवी सुरधुनि, सुरसरि देवनदी।
शिव की जटा विराजती, हरती पाप सभी।।

19.राजा
राजा नरपति भूपति, भूप भूपाल नरेश।
राज करे शासन करे, करते दूर कलेश।

20.साँप
साँप सर्प विषधर भुजंग, नाग फणी अहि ब्याल।
हिय भय से काँपन लगे, आवै जब मन ख्याल।।

21.वस्त्र
वस्त्र वसन कपड़ा पट, अम्बर चौल और चीर।
तन पर सब धारण करें, राजा हो या फकीर।।

22.घर
वास निवास मकान गृह, घर आलय आवास।
सुमति बना के राखिये, लक्ष्मी करें प्रवास।।

23.प्रत्यक्ष
प्रत्यक्ष सम्मुख सामने, दृष्टिगोचर साक्षात।
कहें ''पॉजिटिव'' श्रम करो, स्वस्थ रहेगी गात(शरीर)।

प्रभात कुमार ''पॉजिटिव''
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय महावां,
विकास खण्ड–सरसवां,
ज्नपद–कौशाम्बी।

English Medium Diary

ENGLISH MEDIUM SCHOOL-INTRODUCTION

School plays an important role in shaping one's life, personalities, skills and future.In present generation ,English is the global language and if one seeks to have higher education, English is important.

IMPORTANCE OF MAKING PRIMARY SCHOOLS ENGLISH MEDIUM

This is the fact that a child who lives in village should not be deprived of English Medium education due to his poverty. The state government's decision of introducing English Medium in all government school is for the benefit of poor people who cannot afford private education.

IMPORTANCE OF ENGLISH MEDIUM SCHOOL

In the today's era there is a strong need of a person knowing English especially in India. English is a common medium all around the globe. English is awarded as the second most spoken language in India. English is not the mother tongue of the students.

ADVANTAGES OF ENGLISH MEDIUM SCHOOL

English is one of the most widely spoken language. The greatest advantage of studying English is that your career prospects and employment opportunities can vastly increase. Admission in the English Medium School at an early age can help students a lot to speak in English confidently. If we talk about the today's time. It has become necessary to communicate. Today even for many jobs, English is a must qualification.

Manjula Maurya (H T)
P S chhichha
Khajuha, Fatehpur

प्रेरक प्रसंग

जे. आर. डी. टाटा

शिक्षण संवाद

टाटा समूह एक निजी व्यवसायिक कम्पनी है। यह भारत का सबसे बड़ा कारोबारी समूह है। टाटा कम्पनी के सबसे सफल चेयरमैन जे0 आर0 डी0 टाटा थे। इन्होंने 53 साल तक चेयरमैन का पद सँभाला। जे0 आर0 डी0 टाटा भारत रत्न प्राप्त करने वाले एक मात्र उघोगपति है। इनका पूरा नाम जहाँगीर रतन जी दादा भाई टाटा है। जे0 आर0 डी0 टाटा जी के जीवन से सम्बन्धित कुछ प्रेरक प्रसंग हैं। इन्होंने अपने कार्य काल में 14 कम्पनियाँ शुरू की। तभी की एक घटना है कि जे0 आर0 डी0 टाटा मीठापुर में एक सोडा एश कम्पनी का एक प्लांट लगाना चाहते थे। पर एक अन्तर्राष्ट्रीय एक्सपर्ट ने मना कर दिया और इनकी सलाह नहीं मानी। फिर भी इन्होंने हार नहीं मानी और स्वयं ही अपने बल पर कम्पनी डाली। यह उनकी हिम्मत और विश्वास ही था। जे0 आर0 डी0 टाटा जी की मेहनत सफल हुई और आज उनकी यही कम्पनी टाटा केमिकल की मीठापुर इकाई भारत में सबसे बड़ा इनॉर्गेनिक केमिकल काम्पलैक्स है क्योंकि कहा जाता है कि लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। जे0 आर0 डी0 टाटा जी की इसी हिम्मत के कारण टाटा कम्पनी आज इतनी ऊँचाई पर है। एक और घटना है जब मुंबई में उनके पाँच सितारा होटल में आतंकी हमला हुआ। तब इन्होंने पहले खुद के नुकसान के लिए नहीं सोचा बल्कि खुले हाथों से अपने कर्मचारियों की मदद की। घायलों के इलाज की व्यवस्था स्वयं की तथा उनके परिवार के लिए हर प्रकार से मदद की। जे0 आर0 डी0 टाटा जी की उदारता इसी बात से समझी जा सकती है कि इन्होंने केवल अपने कर्मचारियों की मदद नहीं की बल्कि होटल के आस पास के जो ठेले वाले थे उनकी भी हर संभव मदद की। यह घटना जे0 आर0 डी0 टाटा जी की उदारता का ही उदाहरण है कि इन्होंने अपने कर्मचारियों को अपने परिवार की तरह समझा। यह प्रसंग यह बताने के लिए पर्याप्त है कि जे0 आर0 डी0 टाटा जी न केवल एक सफल उघोगपति थे बल्कि एक अच्छे इन्सान भी थे। 29 जुलाई को जे0 आर0 डी0 टाटा जी की जयन्ती होती है। ऐसे कर्मठ और उदार व्यक्तित्व वाले उघोगपति दूसरों के लिए एक मिसाल है।

अनुप्रिया यादव,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय काजीखेड़ा,
विकास खण्ड–खजुहा,
जनपद–फतेहपुर।

बाल कहानी–1

विश्वास न करने का दुष्परिणाम

शिक्षण संवाद

किसी गाँव में दो बच्चे रहते थे। जो एक–दूसरे के पड़ोसी मित्र थे। उनमें से एक का नाम सोनू और दूसरे का नाम मोनू। वे सदैव मिलजुल कर रहते थे। दोनों के बीच में गहरी मित्रता थी। दोनों एक साथ विद्यालय जाते, पढ़ाई करते और साथ – साथ खेलते। उनका बचपन बहुत ही मजे से बीत रहा था।

समय अपने अनुसार आगे बढ़ता जा रहा था। दोनों मित्र अपनी उम्र के साथ क्रमशः अगली कक्षाओं में बढ़ते जा रहे थे। सोनू और मोनू की मित्रता भी प्रगाढ़ होती जा रही थी।

किन्तु अचानक एक दिन मोनू को राहू नाम का लड़का मिला। वह सोनू के खिलाफ मोनू के कान भरने लगा। जिससे धीरे– धीरे मोनू का सोनू के ऊपर से विश्वास हटने लगा। एक दिन ऐसा आया कि मोनू ने सोनू पर से अपना विश्वास खो दिया और दोस्ती तोड़ दी। राहू से दोस्ती बढ़ा ली।

कुछ समय बाद राहू, मोनू को परेशान करने लगा। यहाँ तक कि वह मोनू के साथ नौकर की तरह व्यवहार करता। तभी मोनू को ज्ञात हुआ कि उसने अपने सच्चे मित्र पर अविश्वास करके बहुत बड़ी भूल की है।

कहानी से शिक्षा– हमें अपने सच्चे मित्र पर अविश्वास और अन्जान व्यक्ति पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

प्रतिमा उमराव
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय अमौली,
शिक्षा क्षेत्र– अमौली,
जनपद– फतेहपुर।

बाल कहानी–2

बुरे काम का बुरा नतीजा

शिक्षण संवाद

चंदनपुर नाम का एक राज्य था। वहाँ का राजा बहुत ही वीर और दयालु था। उसके राज्य में सभी प्राणी मिलजुल कर रहते थे। राजा की पत्नी भी बहुत अच्छी थी। राजा–रानी दोनों बहुत ही प्रेम से रहते थे। उनके राज्य में चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ थी। राजा के यहाँ बहुत ही हरा–भरा बाग था। उस बाग में एक बहुत बड़ा तालाब था। उस तालाब में बहुत सारी मछलियाँ रहती थीं। वह मछलियाँ पानी में उछल–उछल कर सबका मन बहलाया करती थी। एक बार की बात है कि रानी तालाब के किनारे बैठी मछलियों को देख रही थी कि अचानक उसमें सोने के रंग जैसी एक बड़ी सी मछली दिखी। रानी उसको देखती ही रह गई। उसकी सोने जैसी चमक ने रानी का मन मोह लिया। रानी के मन में उस मछली का हार बनवा कर पहनने का ख्याल दिमाग में आया। अब रानी ने राजा से कहा कि उसे उसकी खाल का हार बनवाना है। राजा के बहुत समझाने पर भी रानी नहीं मानी। राजा भी रानी की बात मानने को तैयार नहीं हुए। रानी ने राजा से खाना पीना छोड़ देने की बात कही। राजा, रानी की ज़िद के आगे हार गए। तब रानी ने सिपाहियों को आदेश दिया कि किसी भी कीमत पर मुझे वह मछली चाहिए। सिपाही तालाब में उस मछली को लाने के लिए गए पर वह मछली बहुत ही गहरे पानी में अंदर दुबक कर बैठ गई। सिपाहियों ने रानी को आकर बताया कि महारानी वह मछली हमें नहीं मिली। रानी बहुत गुस्सा हो गईं। रानी का गुस्सा इतना बढ़ गया कि गुस्से में रानी ने पानी में जहर मिला दिया। सारी मछलियाँ तड़प तड़प कर मरने लगीं। मछलियों ने रानी को शाप दिया कि रानी तुम बहुत पछताओगी। तुम्हें इसका अंजाम भुगतना पड़ेगा।

आखिर समय ने उल्टी चाल चली। राज्य में भीषण अकाल पड़ गया। सभी लोग तड़प–तड़प कर मरने लगे। ना तो कोई राजा ही बचा और ना रानी ही जीवित बची। मछलियों के शाप के कारण पूरा राज्य बरबाद हो गया। इसलिए बच्चों हमें रानी जैसा कभी नहीं बनना चाहिए। जीव–जंतुओं से प्यार करना चाहिए। इस पूरी प्रकृति को भगवान ने बहुत सुंदर बनाया है। जब हम सब एक दूसरे से हमेशा प्यार करते रहेंगे तो यह संसार हमेशा महकता

रेनू शर्मा,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय इलाइचीपुर,
विकास खण्ड–लोनी,
जनपद–गाजियाबाद।

बाल फिल्म

काफल

(सुंदर सन्देशों का पिटारा)

शिक्षण संवाद

सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म कैटेगरी का राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी बाल फिल्म काफल वास्तव में फिल्म नहीं बल्कि सुंदर सन्देशों का पिटारा है। गढ़वाली फिल्म होने के नाते पहाड़ी रमणीक दृश्य फिल्म में होना स्वाभाविक है। लेकिन प्रारंम्भिक दृश्य से ही ''भाषा संरक्षण'' के सन्देश को मजबूती से रखती फिल्म मध्यांतर के बाद एक अन्य सन्देश ''प्रति संरक्षण'' को भी बातों बातों में ही सुंदर तरीके से आम जन तक पहुँचाने में सफल रहती है।

थीम :– पहाड़ी भाषा गढ़वाली और कुमाउँनी से प्रेम एवम उनका संरक्षण।

विस्तार :– मुख्य तौर पर अपनी गढ़वाली भाषा से प्रेम और अंग्रेज़ी से कोफ़्त महसूस करने वाला पुत्र और दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ी को उच्च जीवन स्तर प्राप्ति का माध्यम और गढ़वाली पहाड़ी भाषा को पिछड़ेपन का प्रतीक मानने वाले पिता के आपसी संवाद की रोचकता के साथ ही बेटे की गढ़वाली के संरक्षण की जद्दोजहद को खूबसूरती के साथ गढ़ा गया है। अंत में फिल्म सुखांत को प्राप्त होती है जब पिता को निज भाषा, मातृ भाषा के महत्व का अहसास होता है।

मुख्य कलाकार :– हरीश राणा, अजय राणा, अनुराग नेगी, पवन नेगी, कुमारी अंजली

फिल्म क्यों देखनी चाहिए :–

1. यदि निज भाषा से प्रेम है तो अवश्य देखनी चाहिए।
2. प्रति से प्रेम करते हैं और उसको बचाना चाहते हैं तो।
3. हरीश राणा के शानदार बाल सुलभ अभिनय के लिए।

समीक्षा प्रस्तुतिः
दीपक कौशिक,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय भीकनपुर बघा,
विकास क्षेत्र कुंदरकी,
जनपद– मुरादाबाद।

मेरे भैया

रचयिता
बबली सेंजवाल,
प्रधानाध्यापिका,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय गैरसैंण,
विकास खण्ड–गैरसैंण
जनपद–चमोली,
उत्तराखण्ड।

नन्हा मुन्ना प्यारा भाई,
जब से आया मेरे घर में।
चारों ओर है छाईं खुशियाँ,
जैसे – नभ, जल और थल में।
भैया के बिन बहन अधूरी,
घर की हो गई अब खुशियाँ पूरी।
सारे घर में उधम मचाएँ,
जीवन की बगिया महकाएँ।
बीता बचपन भाई के संग,
जीवन के देखे अनेक रंग।
समय गुजरा बड़े हो गये,
अपनी राहों में खड़े हो गये।
सूरज, चंदा जैसा भाई,
झिलमिल तारों जैसा भाई।
तीज, त्यौहार पर आता जाता,
मन को बड़ा सकून दे जाता।
आसमां की ऊँचाई तक,
सागर की गहराई तक।
भाई का रिश्ता है ऐसा,
दुनिया में कोई नहीं जैसा।
जुग–जुग जियो मेरे भैया,
हर दुःख से तुम दूर रहो।
यही दुआ है हर बहन की
तुम खुशियों से भरपूर रहो।

खेल विशेष–1

फायदा–नुकसान

शिक्षण संवाद

प्यारे बच्चों लाभ–हानि (जिसे हम साधारण बोलचाल में फायदा–नुकसान कहते हैं) हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग हैं। तो चलिए आज हम एक गतिविधि के माध्यम से इसे समझने का प्रयास करते हैं। आप सभी अपने घरों में साँप – सीढ़ी का खेल तो जरूर खेलते होंगे। इस खेल में सीढ़ी चढ़ने पर हमें फायदा (लाभ) होता है और साँप के काटने पर नुकसान (हानि)।

चित्र में बनी हरी सीढ़ी चढ़ने पर सीढ़ी के ऊपरी हिस्से के अंक को सीढ़ी के निचले हिस्से के अंक से घटाने पर आपको पता चल जाएगा कि आपको कितने अंको का लाभ हुआ है। (उदाहरण – चित्र में बनी पहली सीढ़ी–1 पर चढ़ने पर आपको 23–2= 21 अंक का लाभ हुआ)

इसी प्रकार चित्र में बने लाल साँप के काटने पर साँप के मुँह पर बने अंक से साँप की पूँछ पर बने अंक को घटाने से आपको पता चल जाएगा की आपको कितनी हानि हुई है।(उदाहरण – चित्र में बने पहले साँप–1 के काटने पर आपको 50–7=43 अंक की हानि हुई)

तो चलिए अब आप साँप सीढ़ी खेलिए और प्रत्येक सीढ़ी चढ़ने पर हुए लाभ और साँप के काटने पर हुई हानि का मान निकालिए।

है ना मजेदार खेल के साथ–साथ मजेदार पढ़ाई।

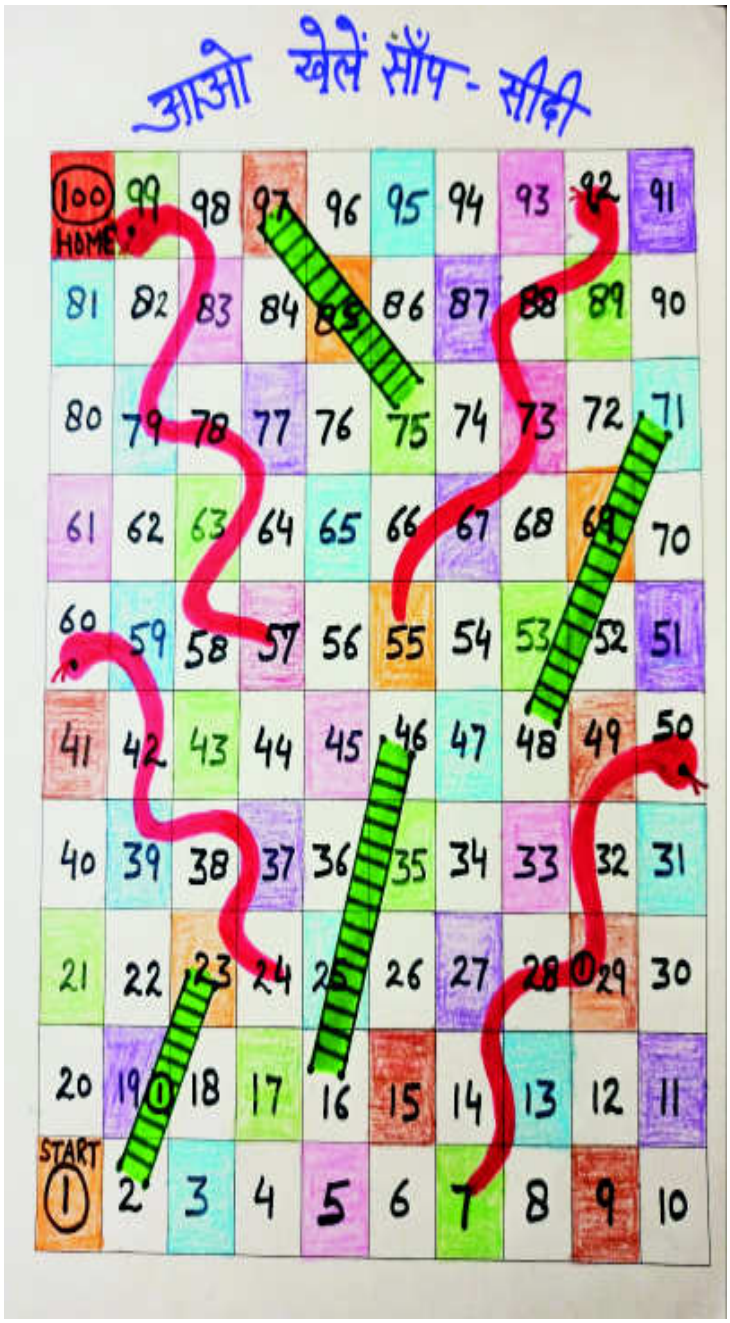

श्वेता दीक्षित,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय सलेमपुर कायस्थ,
विकास खण्ड–सिकंदराबाद,
जनपद–बुलंदशहर।

शिक्षा में खेल का महत्व

शिक्षण संवाद

खेलकूद जीवन का एक अभिन्न अंग है। खेल के माध्यम से छात्र अपने विभिन्न महत्वपूर्ण कौशल का विकास कर सकते हैं। छात्र खेल के माध्यम से अनगिनत खूबियाँ विकसित कर सकते हैं जैसे कि सोच, रचनात्मकता, टीमवर्क और बहुत सारी अच्छी आदतें आदि।

शिशु और खेल

इंसान की शिक्षा खेल से ही शुरू होती है। इंसान जब शिशु होता है, तभी से उसकी शिक्षा शुरू हो जाती है। शिशु में गति की शिक्षा खेलकूद से ही शुरू होती है। बच्चा जब लेटा हुआ होता है और अपने हाथों एवं पैरों को हिलाता रहता है, तो लोग कहते हैं कि बच्चा खेल रहा है अर्थात बच्चा रोने के अलावा कोई भी हरकत करता है तो हम लोग कहते हैं कि बच्चा खेल रहा है। इस खेल–खेल से ही बच्चों की शिक्षा शुरू हो जाती है। हमारे गाँव में बच्चे मिट्टी के खिलौने, बर्तन आदि बनाते हैं। इस खेल से उन्हें ज्ञान होता है कि बर्तन, खिलौने आदि कैसे होते हैं। इससे उनमें कुछ नया करने की भावना उत्पन्न होते हुए क्रियात्मक कौशल का विकास होता है। जब एक साथ कई बच्चे मिलकर खेलते हैं, एक–दूसरे की मदद करते हैं इस प्रकार उनमें कई कौशलों का विकास होता रहता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बच्चे शुरू से ही खेल–खेल में अपनी शिक्षा को प्रारंभ कर अपने कौशल को विकसित करने लगते हैं।

विद्यार्थी जीवन की शिक्षा में खेल का महत्व

हम सभी का शरीर बहुत ही कीमती है। इसकी हिफाजत करना हमारी जिम्मेदारी है। ''स्वस्थ शरीर'' में ''स्वस्थ दिमाग'' रहता है। शिक्षा के साथ–साथ खेल से हमारा सर्वांगीण विकास होता है। खेल से शरीर स्वस्थ एवं फुर्तीला रहता है और हम लोगों में सीखने–सिखाने, सहयोग करने, आत्मनियंत्रण और बलिदान देने जैसी क्षमताओं का विकास होता है। विद्यार्थी जीवन में खेल का बहुत बड़ा महत्व है, सभी विद्यालयों में खेल के फायदे को देखते हुए खेल को अनिवार्य किया गया है और उसका फायदा भी नज़र आने लगा है। 1990 ई. से पहले खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में खेल को ज्यादा अहमियत नहीं दी जाती थी। लेकिन लोग जैसे–जैसे जागरुक होते गए, खेल की अहमियत को समझने लगे और सभी विद्यालयों में खेल को अनिवार्य रूप से लागू किया जाने लगा। पहले ज्यादातर विद्यालयों में बच्चों को कबड्डी का खेल खिलाया जाता था लेकिन धीरे–धीरे अब क्रिकेट, वॉलीबॉल, फुटबॉल, बैडमिंटन, कैरम जैसे बहुत सारे खेलों को विद्यालयों में खिलवाया जाने लगा। जब विद्यालयों में नियमित रूप से खेल के लिए प्रोत्साहित किया जाने लगा और बच्चों ने निरंतर खेलना शुरू किया तो उनके शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संस्थाओं

में तेजी से विकास होने लगा। वैसे जो विद्यार्थी खेल में रुचि नहीं रखते थे, वे बुझे–बुझे रहते थे। जब उनको खेल के लिए प्रोत्साहित किया गया और उन्होंने खेलना शुरू किया तो उनमें भी चुस्ती, फुर्ती आ गई और पढ़ने में भी मन लगने लगा।

हमने भी अपने विद्यालयों में इसका प्रयोग पढ़ाई में कमजोर बच्चों पर किया तो आश्चर्यजनक रूप से उन बच्चों में बदलाव आया। हमने कक्षा में भी इसका प्रयोग किया, ''घंटी'', खेल से ही शुरू किया, मतलब ये कि पहले पाँच मिनट बच्चों को कोई खेल खिलवाया। इसका बहुत ही फ़ायदा नज़र आया। पहले बच्चे यदि 60% ग्रहण कर पाते थे तो पहले 5 मिनट कोई खेल खिला देने के बाद 80% ज्यादा अब ग्रहण करने लगे। तब से हमने खेल की घंटी के अलावा यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक शिक्षक अपना विषय शुरू करने से पहले पाँच मिनट बच्चों से कोई ना कोई खेल खिलवाएँ।

खेल का सामाजिक तथा राष्ट्रीय महत्व

आजकल खेल मनोरंजन के साथ–साथ सामाजिक तथा राष्ट्रीय महत्व भी रखता है। इससे छात्रों में अनुशासन पैदा होता है, खेल में नियमों का पालन कर एक साथ मिलकर खेलना पड़ता है, जिससे आपसी सहयोग और मेलजोल बढ़ता है। यदि किन्हीं दो क्षेत्रों में मनमुटाव है तो खेल में भाग लेने से मनमुटाव समाप्त हो जाता है। खेल जीविकोपार्जन का भी एक बेहतरीन साधन है। पढ़ाई के साथ–साथ खेल में भाग लेने वाले बच्चे अपना भविष्य या करियर खेल में भी अच्छा कर सकते हैं। आज खेल में ऊँचा स्थान प्राप्त करने वाले व्यक्ति का बड़ा महत्व है। उनको किसी ऊँचे स्थान पर पदस्थापित कर दिया जाता है उन्हें सारी सुविधाएँ दी जाती हैं। अच्छा खेलने वाला व्यक्ति राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलता है और अपने अपने घर, गाँव, समाज और देश का नाम रोशन करता है। ऐसे बहुत से उदाहरण हमारे सामने हैं। क्रिकेट की दुनिया में बहुत से खिलाड़ियों ने अपने खेल का अच्छा प्रदर्शन कर इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज करवा लिया है। कपिल देव, सुनील गावस्कर, सचिन तेंदुलकर, महेंद्र सिंह धोनी, विराट कोहली जैसे बहुत से खिलाड़ियों ने ना केवल अपना बल्कि अपने देश का नाम पूरी दुनिया में रोशन किया है। क्रिकेट के अलावा बहुत से अन्य खेलों जैसे हॉकी, बैडमिंटन, टेनिस, कुश्ती, एथलीट आदि में हमारे देश के खिलाड़ियों ने अपना और अपने देश का नाम पूरी दुनिया में रोशन किया है।

इन सभी लोगों ने शिक्षा में खेल के महत्व को समझा और आज खेल जगत में अपना नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज करवा लिया।

अभिषेक कुमार,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय जखौली,
विकास खण्ड–डुमरियागंज,
जनपद–सिद्धार्थनगर।

नेति

शिक्षण संवाद

नेति का उद्देश्य केवल नासिका की शुद्धि ही नहीं बल्कि इसमें स्थित श्लेष्मा झिल्ली को बाह्य वातावरण में होने वाले धूल, धुआँ, गर्मी, ठंड और कीटाणु आदि को सहन करने में पूरी तरह सक्षम बनाता है। यह क्रिया नाक व कंठ के अंदर की गन्दगी को बाहर निकाल कर नाक की नली को साफ करता है।

नेति की छः प्रमुख क्रियाएँ–

षटकर्म की छः क्रियाओं (नेति, धौति, बस्ति, त्राटक, नौली तथा कपालभाति) में नेति क्रिया का स्थान प्रथम है।

नेति साधारणतः छः प्रकार की होती है।

1. जलनेति	2. दुग्धनेति	3. सूत्रनेति
4. रबर नेति	5. घृत नेति	6. तेल नेति

1. जलनेतिः एक लीटर गुनगुने पानी में लगभग 10 ग्राम सेंधा नमक या साधारण नमक का भी प्रयोग कर सकते हैं गर्म करके नेति वाले लोटे में भर लें। प्रातः काल का समय, बिना कुछ खाये, नेति करने के लिए सर्वश्रेष्ठ है। किसी विशेष रोग में इसको दोनों समय में भी कर सकते हैं। लोटे की नली को दाईं नासिका में लगाकर, बाईं ओर की नासिका को थोड़ा नीचे रखें। मुख को थोड़ा खोलकर श्वांस – प्रश्वांस की प्रक्रिया को मुख से करते रहें। बाईं नासिका से जल अपने आप बाहर निकालने लगेगा। इसी प्रकार दूसरी नासिका से भी करें। कफ रोग न हो तो धीरे – धीरे नमक रहित ताजे पानी से अभ्यास करना चाहिए। जलनेति करने के पश्चात भासिका क्रिया करनी चाहिए जिससे नासिका में रुका हुआ या भर जाने वाला पानी बाहर निकल जाए। नासिका में पानी रुका रह जाएगा तो जुकाम के बढ़ जाने की पूरी संभावना रहती है, इसलिए इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

2. दुग्धनेतिः इस नेति का प्रयोग भी जलनेति की तरह ही किया जाता है, फर्क इतना है कि इस नेति में दुग्ध का पान किया जाता है व दुग्ध को मुँह से बाहर नहीं निकालते अपितु इसको धीरे – धीरे पी जाते हैं।

3. सूत्रनेतिः यह सूत्र से बनी हुई एक रस्सी के प्रकार की होती है, जिसे सूत्रनेति कहा जाता है। उसी से यह क्रिया होती है। सूत्रनेति को नासिका में डालने से पहले भिगो लेना चाहिए। भिगोकर थोड़ा वृत्ताकार में जहाँ पर सूत्रनेति में मोम लगा रहता है, वहाँ से मोड़ना चाहिए, जिससे नेति सरलतापूर्वक नासिका द्वार में प्रविष्ट होकर, मुख से बाहर निकल आती है। मुख से बाहर निकले हुए नेति के एक सिरे को एक हाथ से पकड़े व दूसरा सिरा दूसरे हाथ से पकड़कर दोनों हाथों में नेति को धीरे – धीरे ऊपर – नीचे चलाएँ। ऐसा करने से नाक व गले में जमा हुआ कफ बाहर निकल आएगा व सर्दी – जुकाम में लाभ मिलेगा। यह क्रिया दोनों नासिकाओं से बारी – बारी से करनी चाहिए। इसके बाद नेति के एक सिरे को पकड़ कर

धीरे – धीरे बाहर निकाल लें। सूत्रनेति करने से नाक व गले में एक विशेष प्रकार की पीड़ा का अनुभव होने लगता है। इसलिए इसके पश्चात घृत नेति या तेल नेति करना चाहिए।

4. रबर नेतिः इस नेति का प्रयोग भी सूत्रनेति की तरह ही होता है। परन्तु इसमें सूत्रनेति के स्थान पर रबर नेति का प्रयोग किया जाता है।

5. घृत नेतिः कुर्सी पर बैठकर या तख्त अथवा चारपाई पर लेटकर, सिर को थोड़ा नीचे की ओर लटकाएँ। अब ड्रापर की सहायता से दोनों नासिकाओं में 8–10 बूँद, गुनगुने घी को डालिए व इसी अवस्था में कुछ समय बैठे या लेटे रहें।

6. तेल नेतिः यह नेति भी घृत नेति की तरह की जाती है। इसमें घी के स्थान पर तेल का प्रयोग करते हैं। इस क्रिया में सरसों के तेल का प्रयोग अति उत्तम रहता है।

लाभः षटकर्म में नेति क्रिया करने से गर्दन के ऊपर होने वाले रोगों को ठीक करने में विशेष लाभ मिलता है। जैसे –

1. नेत्रों के लगभग समस्त प्रकार के रोग ठीक हो जाते हैं, जैसे चश्मे का नंबर कम हो जाता है।
2. बाल झड़ने रुक जाते हैं।
3. सिर की खुश्की व गर्मी कम हो जाती है।
4. बहरापन ठीक होने लगता है।
5. स्मरण शक्ति तेज होने लगती है।
6. मोतियाबिंद होने की संभावना कम हो जाती है।
7. लकवे का आक्रमण होने की संभावना कम हो जाती है।
8. मुहांसे निकलने बन्द हो जाते हैं।
9. खाँसी, स्नोफिलिया, दमा, ब्रोंकाइटिस, टांसिल, माइग्रेन, सिरदर्द, अनिद्रा, चक्कर आना, मिर्गी, हिस्टीरिया, हकलाहट, हाथों–पैरों में कम्पन, टी. वी. आदि में यह क्रिया अत्याधिक लाभकारी है।
10. इस क्रिया को करने से गुस्सा, झुंझलाहट, हिंसा आदि के स्वभाव में भी कमी आने लगती है।
11. इस क्रिया को नियमित करने से शरीर को हानि पहुँचाने वाले पदार्थ जैसे चाय, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, गांजा, भांग, अफीम, शराब आदि की आदत अपने आप छूट जाती है।
12. इस क्रिया का उद्देश्य नासिका की शुद्धि ही नहीं अपितु बाह्य वातावरण के प्रदूषण जैसे धूल के कण, धुआँ, उष्णता, शीतलता, रोगाणुओं एवं कीटाणुओं से श्लेष्मा – झिल्ली की रक्षा कर उसको सक्षम बनाना भी है।
13. नासिका के अंदर बढ़े हुए नासांकुर को भी इस क्रिया से ठीक किया जा सकता है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए नेति क्रिया को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

शिल्पी गोयल,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय निजामपुर,
विकास खण्ड–सिकन्दराबाद,
जिला–बुलंदशहर।

गृह शिक्षा कार्यक्रम (Home Education program)

ग्राम शिक्षा सैनिकों की नायाब पहल

कार्य योजनाः–

सर्वप्रथम दोनों सेवित क्षेत्रों(गाँव) की अलग–अलग कक्षावार बच्चों की सूची बनाई गयी। इसके बाद अलग–अलग गाँव व कक्षा हेतु पंजिकाएँ बनाई गयी, जिसमें बच्चों का नाम व पिता का नाम दर्ज किया गया। उसके आगे उपस्थिति हेतु कॉलम बना दिए गए। किसी भी समूह में छात्रों की अधिकतम संख्या 13 रखी गयी जिससे कि सोशल डिस्टेंसिंग का पालन किया जा सके।

अगले क्रम में प्रत्येक सेवित क्षेत्र से प्रत्येक कक्षा के लिए एक के हिसाब से 5 ग्राम शिक्षा सैनिक चयनित किए गए। इस प्रकार दोनों गाँवों हेतु कुल 10 ग्राम शिक्षा सैनिक का चयन किया जाना प्रस्तावित था परन्तु एक कक्षा में संख्या अधिक होने के कारण 11 ग्राम शिक्षा सैनिकों का चयन किया गया।

विद्यालय के शिक्षक/शिक्षिकाओं की भूमिकाः– हम शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा व विषयवार इस प्रकार अभ्यास कार्य तैयार किया जाता है जोकि प्रथमतः प्रकरण को समझाते हुए वर्णन किया जाता है, तदुपरांत उसी से सम्बंधित अभ्यास कार्य दिया जाता है। अभ्यास कार्य प्रतिदिन हम शिक्षकों द्वारा ग्राम शिक्षा सैनिक व्हाट्सअप समूह में डाल दिया जाता है। फिर सभी ग्राम शिक्षा सैनिक उसी अनुसार शिक्षण करते हैं, कॉपी चेक करते हैं फिर अभिभावक समूह में डालते हैं। हम शिक्षकगण लगातार मार्गदर्शन करते रहते हैं।

ग्राम शिक्षा सैनिक का कार्यः– ग्राम शिक्षा सैनिक के रूप में ऐसे व्यक्ति का चयन किया गया जिसका विद्यालय व शिक्षा व बच्चों से सदैव विशेष लगाव रहा है, जो स्वैच्छिक स्वयंसेवी के रूप में बच्चों को घर पर ही शिक्षा देने के लिए तैयार हो।

ग्राम शिक्षा सैनिक सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए अभ्यास कार्य को दिवसवार बच्चों से साझा करते है व अभ्यास कार्य को तैयार करवाते हैं। साथ ही समय–समय पर अध्यापकों का मार्गदर्शन प्राप्त करते रहते हैं।

गृह शिक्षा कार्यक्रम का परिणामः– ऑनलाइन शिक्षण में हमारे अधिकांश एंड्राइड सेट व इंटरनेट के अभाव में शिक्षा नहीं प्राप्त कर पा रहे थे। गृह शिक्षा कार्यक्रम लागू होने के बाद ग्राम शिक्षा सैनिकों के माध्यम से शत–प्रतिशत बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इस तरह कोविड–19 से मिलने वाली चुनौतियों का डट कर मुकाबला करते हुए बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने में यह कार्यक्रम पूरी तरह सफल रहा और इन विपरीत स्थितियों में शत–प्रतिशत बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने का असम्भव सा दिखने वाला कार्य सम्भव हुआ और धरातल पर उतर सका।

जिन ग्राम शिक्षा सैनिकों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना महती योगदान दिया उनका उल्लेख न किया जाए तो यह लेख कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। अतः शिक्षा की नींव को मजबूत करने वाले हमारे गौरव ग्राम शिक्षा सैनिकों के नाम निम्नवत हैं–
श्री नैमिष कुमार, श्री अजय कुमार, श्री सत्यम शुक्ल, सुश्री संगीता, श्री दीपू यादव, श्री शिवकांत, सुश्री बबली, सुश्री लक्ष्मी, श्रीमती पुष्पा यादव, श्रीमती संगीता, श्री गोलू यादव।
ग्राम शिक्षा सैनिकों की ओर से–

चलो माटी का हम कर्ज उतारें।
बच्चों का हम भाग्य सँवारें।।

अजय सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर,
विकास क्षेत्र– सिधौली,
जनपद– सीतापुर।

Innovation

नवाचारों में निहित देश की प्राथमिक शिक्षा

शिक्षण संवाद

"सच्ची शिक्षा वह है जो बालकों के आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा शारीरिक विकास हेतु प्रेरित करती है।" – महात्मा गांधी

यह कहने की जरूरत नहीं कि किसी भी देश, काल एवं परिस्थिति में शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य उस देश के लिए सच्चरित्र, स्वस्थ मस्तिष्क युक्त कुशल नागरिक निर्माण करना ही रहा है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्राथमिक स्तर से ही प्रयास किया जाना आवश्यक है। वास्तव में मानसिक सक्रियता बनाए रखना सीखने की सर्वोत्तम प्रक्रिया होती है अर्थात मानसिक सक्रियता सीखने का संकेत है, जिसे दिन– प्रतिदिन बढ़ाने एवं इसमें पैनापन लाने की आवश्यकता है। इसके लिए सिखाने के तरीकों, शिक्षण सामग्री के प्रयोग का ढंग एवं माहौल महत्वपूर्ण होता हैद्य साथ ही यदि शिक्षक रोचकता और चुनौतियाँ प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं तो कमोबेश यह लक्ष्य हासिल करना थोड़ा मुश्किल हो सकता है। शिक्षण के तरीकों में इस प्रकार खुलापन हो कि हर स्तर पर मानसिक सक्रियता बनी रहे, परंतु ऐसा भी ना लगे कि जबरन थोपा जा रहा है अर्थात "सोचो" कहने के साथ कोई नहीं सोचता अपितु इसके लिए स्वाभाविक वातावरण सृजन की आवश्यकता है।"

सीखना सदैव स्वयं से होता है। शिक्षार्थी, अपने ही अनुभवों का क्रमिक विश्लेषण करते हुए सीखते हैं। हमारा मस्तिष्क सीखने के इन चरणों से होकर गुजरता है–

Experience–अनुभव करना
Reflection– चिंतन/विश्लेषण
Application–अनुप्रयोग
Consolidation–समेकन/ निष्कर्ष

सीखना कभी भी एक सीधी रेखा(straight line) में नहीं होता अपितु यह एक चक्रीय प्रक्रिया है। जो उम्र के अनुसार आगे बढ़ती रहती है। ऐसा कदापि नहीं होता कि एक स्तर पर निष्कर्ष के बाद सीखना रुक जाता हो अपितु एक स्तर का निष्कर्ष अगले स्तर के अनुभव के रूप में कार्य करता है और इस प्रकार ज्ञान कौशलों का दायरा विस्तृत होता रहता है। इसे निम्नलिखित प्रक्रियात्मक चित्र द्वारा भी समझा जा सकता है–

सीखने की इसी प्रक्रिया को आनंददायी एवं रोचक बनाने के लिए देशभर के प्राथमिक शिक्षकों एवं प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही विभिन्न एजेंसियों (**NGO**) द्वारा नित नए प्रयोग किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयोगों को विभिन्न

नवाचारों के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। शिक्षकों के प्रयासों को आँकड़ों के विश्लेषण तक सीमित करने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा वास्तव में ऐसा क्षेत्र है जहाँ तात्कालिक परिणाम नहीं मिलते। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE–2020) की घोषणा भी शिक्षा में गुणवत्ता एवं अपने वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति में ही निहित है और इसकी प्रक्रिया भारत सरकार के नीति आयोग द्वारा घोषित School Education Quality Index (SEQI) की घोषणा के साथ ही शुरू हो गई और NAS (National Achievement Survey) के रूप में आरंभ प्रतिस्पर्धा का दौर निश्चय ही कुछ नया करने के लिए शिक्षकों को प्रेरित कर रहा है।

प्राथमिक शिक्षकों को किसी भी नवाचार पर कार्य आरम्भ करने से पूर्व एक बार अपने बचपन को अवश्य याद करना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में नित नए प्रयोग किए जा रहे हैं और इसे आँकड़ों का खेल कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अधिकांश शिक्षकों द्वारा अपने अनुभवों के आधार पर जो कार्य किए जा रहे हैं उनके परिणाम उत्साहित करने वाले हैं। बेहतर परिणामों के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों को बच्चों के साथ कार्य करने एवं उनको समझने के लिए पर्याप्त अवसर दिए जाएँ परंतु शैक्षिक प्रशासन द्वारा इसे कभी भी गंभीरता से नहीं लिया गया। शिक्षकों के सीधे संपर्क में रहने वाले कतिपय शिक्षाधिकारियों को छोड़, मनोवृति में बदलाव आवश्यक है, जिन शिक्षाधिकारियों द्वारा शिक्षकों के प्रयासों को सराहा जाता है और उनको कार्य करने के पर्याप्त अवसर दिए जाते हैं, वे और अधिक जोश व उमंग के साथ कार्य कर रहे हैं।

Covid–19 जैसी वैश्विक महामारी के दौर में शिक्षकों का एक ऐसा वर्ग भी उभर कर सामने आया है जिन्होंने स्वप्रेरित होते हुए अपने छात्रों को सिखाने के विभिन्न तरीके खोजे हैं। वास्तव में बालकों के प्रति सही समझ उनके शिक्षकों को ही होती है तभी तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE–2020) में प्राथमिक शिक्षा के दौरान मातृभाषा पर विशेष जोर दिया गया है अर्थात प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों द्वारा किए जा रहे नवाचार बेहद महत्वपूर्ण है। नवाचारों में ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं–

सरल, सहज एवं आनंददायी वातावरण सृजन
सबकी भागीदारी, चुनौती और जीतने की इच्छा
ठोस वस्तुओं के साथ अनुभव
स्वानुशासन
गलतियाँ, सुधार के अवसर एवं मौकों की संभावना

यदि नवाचारों को वास्तव में गंभीरता के साथ पर्याप्त समय के लिए लागू करने का अवसर शिक्षकों को मिले तो देश की प्राथमिक शिक्षा में सीखने के संकट को दूर किया जा सकता है और देश में गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा सभी के लिए सुलभ हो सकेगी बस हमें प्रतिबद्ध होना होगा कि ''बच्चे समझ के साथ सीख सकें।''

संजीव कुमार शर्मा
सदस्य– UPSRG
सदस्य– दीक्षा वीडियोशूट टीम, उ. प्र.
प्रभारी प्रधानाध्यापक
कंपोजिट स्कूल– राजमार्गपुर
विकास खण्ड–अतरौली,
जनपद–अलीगढ़।

नवाचार

रंगों से सीखो

शिक्षण संवाद

नवाचार मतलब वह एक प्रयास जिससे आप बच्चों के अन्दर अभूतपूर्व बदलाव ला सकें, उसका विद्यालय में मन लगे व रोज आएँ। वैसे बच्चों को गणित, अंग्रेजी, हिन्दी, हमारा परिवेश आदि विषयों पर ही सबका जोर रहता है। मैंने महसूस किया बच्चे ड्राइंग बहुत खुश होकर करते हैं। तो मैंने भी वही किया, उन्हें रंगों का भी बड़ा खर्च लगा। फिर मैंने उसकी भी व्यवस्था कर दी। रंग और कागज सब विद्यालय से ही उपलब्ध कराया। अब क्या हर पाठ पर ड्राइंग, हिन्दी में मुहावरे, पर्यायवाची, अंग्रेजी में कहानी/कविता चित्रकला सब कुछ बच्चे खुश होकर बनाने लगे। शनिवार को स्वच्छता, जल संरक्षण, प्रदूषण सम्बन्धी रोग, वृक्षारोपण आदि विषयों और ड्राइंग, निबन्ध व अनुच्छेद आदि से लिखवाना, प्रतियोगिता कराना शुरू किया। यह कार्य में 2, 3 सालों से करा रही हूँ। जिसका परिणाम यह निकला कि जो बच्चे कम उपस्थित रहते थे। अब नियमित आते हैं और शनिवार को तो बच्चे पूरे उत्साह में आते हैं। एक तो मीना मंच दूसरे ड्राइंग प्रतियोगिता उनके लिए पसंदीदा कार्य जो थे। स्वच्छता को ड्राइंग पर ही नहीं वरन जीवन में ढालने लगे। वे सब चित्रों के माध्यम से ही सीखने लगे। रंगों की दुनिया बहुत हसीन होती है। खुशियाँ बिखेरती हैं।

आज विद्यालय में मेरी ड्राइंग से ज्यादा मेरे बच्चों की है। उन्हें कक्षा में सुतली से बाँध बाँधकर मैं लगाती हूँ। बच्चे भी खुश और अभिभावक भी खुश होते हैं। अभिभावकों में भी होड़ सी होती है। कुछ लोग बच्चों को रंग आदि भी दिलवाने लगे हैं जो पहले उन्हें अनावश्यक खर्च लगता था।

ऋचा सिंह मलिक,
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय सुल्तानपुर,
विकास क्षेत्र– मुरादनगर,
जनपद– गाजियाबाद।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. ट्विटर एकाउण्टः https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. टेलीग्रामः https://t.me/missionshikshansamvad
9. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद